लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth & Public Interest

हिमज्योति

सितम्बर 2022

अंक : द्वादश



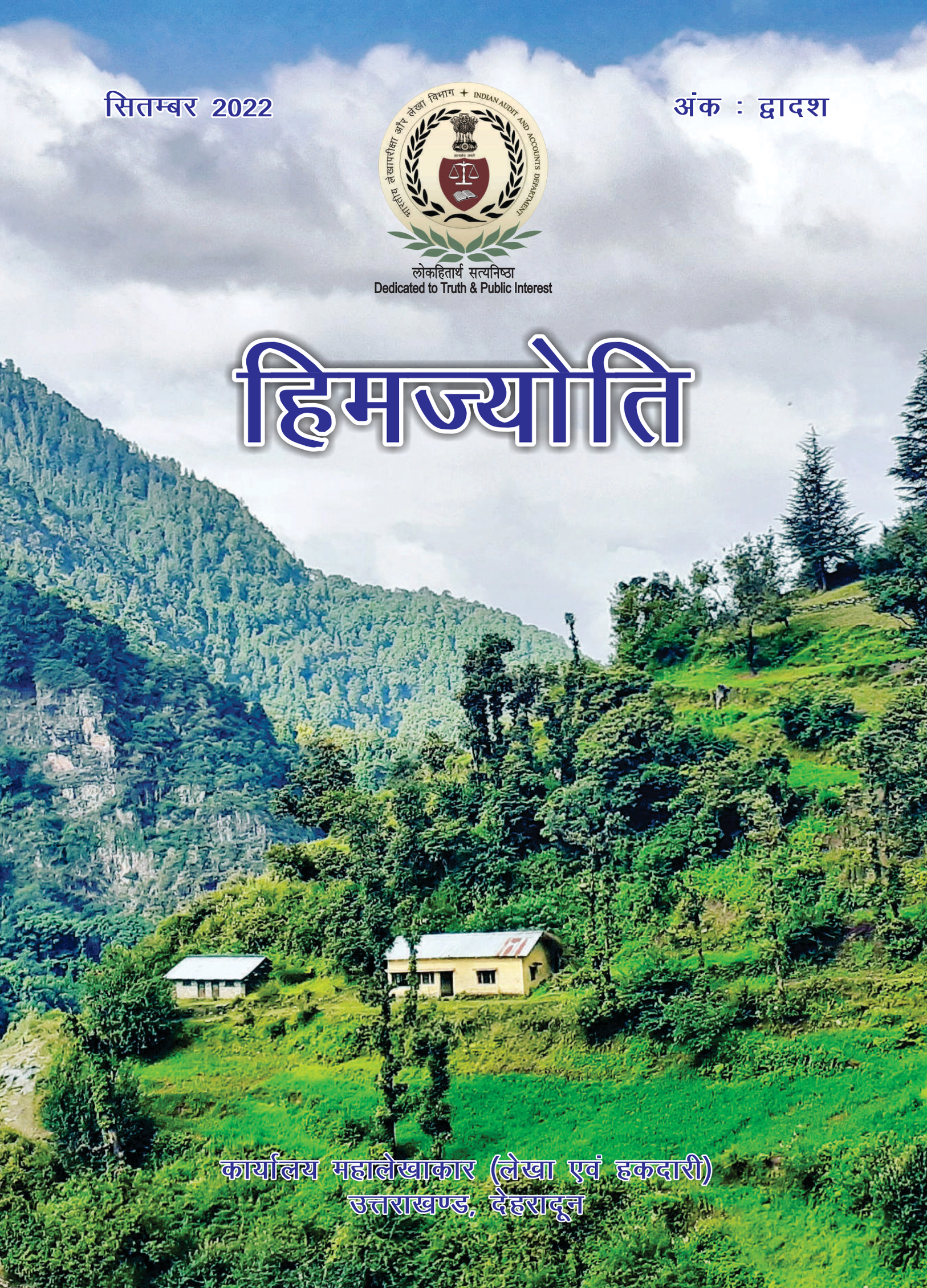
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
उत्तराखण्ड, देहरादून

सितम्बर 2022

अंक : द्वादश

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth & Public Interest

हिमज्योति



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
उत्तराखण्ड, देहरादून



सत्यमेव जयते



श्री राजीव कुमार
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
उत्तराखण्ड

सन्देश

कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका "हिमज्योति" के बारहवें अंक के सफल प्रकाशन पर मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। यह अत्यधिक प्रसन्नता का विषय है कि कार्यालय विगत ग्यारह वर्षों से निरन्तर ''हिमज्योति'' पत्रिका का प्रकाशन कर रहा है। मैं इस अवसर पर पत्रिका के इस अंक के लिए अधिकारी/कर्मचारी वर्ग में हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने की दिशा में हिन्दी प्रकोष्ठ के सभी कार्मिकों द्वारा किए गए तत्पर प्रयासों के लिए उन्हें बधाई देता हूँ।

हिन्दी को हमारे संविधान में राजभाषा का दर्जा दिया गया है। बहुसंस्कृति और बहुभाषा वाले हमारे देश में सब को एक साथ लेकर चलने में हिन्दी की महती भूमिका रही है। एक केन्द्रीय कार्यालय होने के नाते यह हम सबका सामूहिक दायित्व है कि राजभाषा हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग को प्रोत्साहित करें। इस दिशा में पत्रिका का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण और ठोस प्रयास है। मेरा मानना है कि पत्रिका के प्रकाशन से कार्मिकों की रचना धर्मिता में अभिवृद्धि होती है, जो उन्हें हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में और अधिक कार्य करने को प्रेरित करता है।

मुझे आशा है कि पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक एवं रूचिकर सिद्ध होंगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए मैं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

राजीव कुमार

संरक्षक



छाया चित्र – श्री श्रीगोपाल पाठक, वरिष्ठ खण्डीय लेखाधिकारी (सेवानिवृत्त)

सत्यमेव जयते



डॉ० काव्यदीप जोशी
वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन)

प्रधान सम्पादक की कलम से

कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "हिमज्योति" का बारहवाँ अंक आप सभी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। हिमज्योति पत्रिका में कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को एक उत्कृष्ट मंच प्रदान किया है, जिसके माध्यम से वे हिन्दी भाषा का प्रयोग करते हुए अपने विचारों को अपने लेख, रचनाओं, कविताओं, चित्रों आदि के माध्यम से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर सकते हैं। हिन्दी को संविधान द्वारा राजभाषा घोषित किया गया है एवं प्रत्येक कार्यालय के राजभाषा अनुभाग/हिन्दी अनुभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के लिए उत्तरदायित्व सौंपा गया है। इसी दिशा में कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका हिमज्योति का सफल प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है। हिन्दी गृह पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी सदस्य निःसंदेह बधाई के पात्र हैं। अंत में मैं सभी सहयोगियों का आभार प्रकट करते हुए हिमज्योति के सफल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ देता हूँ।

प्रधान संपादक



सत्यमेव जयते



श्री तुषार कैन
उपमहालेखाकार (निधि)

सम्पादकीय

कार्यालयीन गृह पत्रिका हिमज्योति का बारहवें अंक के सफल प्रकाशन पर मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। वैसे तो भारतीय इतिहास में अनेक साहित्यकारों, कवियों, रचनाकारों ने अपनी उत्कृष्ट कृतियों से हिन्दी भाषा को अत्यधिक सफल एवं समृद्ध बनाया है, परंतु भारत के नागरिक एवं सरकारी कार्यालयों में कार्यरत होने के नाते यह हम सबका प्रथम कर्त्तव्य बनता है कि हम अपने कार्यालय में राजभाषा हिन्दी का सुचारू कार्यान्वयन सुनिश्चित करें। शासकीय प्रयोजनों में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग हमारा संविधानिक दायित्व है। हम सबको हिन्दी के प्रयोग, प्रचार–प्रसार एवं विकास में सक्रिय सहयोग प्रदान करना चाहिए। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी राजभाषा प्रेमियों का सहर्ष धन्यवाद।

संपादक

हिमज्योति पत्रिका परिवार

सरंक्षक एवं निदेशक
श्री राजीव कुमार
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

प्रधान संपादक
डॉ0 काव्यदीप जोशी
वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन एवं लेखा)

सम्पादक
श्री तुषार कैन
उपमहालेखाकार (निधि)

सलाहकार सम्पादक
श्री डी0डी0 पाण्डे
वरिष्ठ लेखाधिकारी

श्री जे0 के0 जोशी
वरिष्ठ लेखाधिकारी

श्रीमती पूनम शर्मा
हिन्दी अधिकारी

सहायक सम्पादक
डॉ0 दिनेश शर्मा
सहायक लेखाधिकारी (तदर्थ)

साज–सज्जा
श्रीमती बीना रावत
वरिष्ठ लेखाकार

टंकण
श्री चौधरी कौशतव
आँकड़ा प्रविष्टि संचालक

आवरण पृष्ठ – भगीरथ पर्वत, गंगोत्री रेंज
छायाकार – श्री श्रीगोपाल पाठक, वरिष्ठ खण्डीय लेखाधिकारी (सेवानिवृत्त)

पार्श्व पृष्ठ – चौखम्बा पर्वत, चमोली, उत्तराखण्ड
छायाकार – श्री आशीष मलिक, सहायक लेखाधिकारी

रचनाकारों के विचारों से संपादक मण्डल की सहमति आवश्यक नहीं है।

सत्यमेव जयते



पूनम शर्मा
हिन्दी अधिकारी

सम्पादकीय

हिमज्योति के बारहवें अंक को आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष एवं आनंद की अनुभूति हो रही है। कोरोनाकाल की इस विषम परिस्थिति में भी सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के स्नेह, मेहनत एवं लगन के फलस्वरूप हम इस वर्ष भी हिमज्योति के सफल संपादन को चरितार्थ कर पाए हैं। कार्यालय के सदस्यों ने उत्साहपूर्वक अपने अनुभवों, संस्मरणों, विचारों, रचनाओं, लेखों एवं कविताओं के माध्यम से व्यक्त कर सराहनीय योगदान दिया है। भिन्न–भिन्न विधाओं/विषयों पर आधारित रचनाओं द्वारा पत्रिका को रूचिकर बनाने का भरसक प्रयत्न किया गया है।

हिन्दी की कई विशेषताओं और लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने गंभीर विचार–विमर्श के बाद आपसी सहमति से हिन्दी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा हिन्दी संबंधित संवैधानिक प्रावधानों को 14 सितंबर 1949 को अंगीकार किया। विभिन्न भाषाएँ और संस्कृतियाँ भारत की पहचान है, सभी भाषाओं का समृद्व इतिहास है, परंतु पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने का काम हिन्दी ने बखूबी किया है। हिन्दी के और अधिक प्रचार–प्रसार में हमारी पत्रिका भी एक छोटा सा प्रयास है।

संपादक मण्डल, विभिन्न रचनाकारों के पत्रिका में सहयोग देने एवं इसके सफल प्रकाशन के लिए मैं हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ एवं आशा करती हूँ कि भविष्य में भी मुझे निरंतर आप सभी का सहयोग एवं स्नेह इसी प्रकार से प्राप्त होता रहेगा।

हमें इस अंक पर आपकी टिप्पणियों और सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

पूनम शर्मा
हिन्दी अधिकारी

हिमज्योति सम्पादक मण्डल



बैठे हुए (बायें से दायें) : श्री तुषार कैन, उप महालेखाकार (निधि) – सम्पादक
श्री राजीव कुमार, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) – संरक्षक
डॉ0 काव्यदीप जोशी, वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन एवं लेखा) – प्रधान सम्पादक

खड़े हुए (बायें से दायें) : श्री देवी दत्त पाण्डेय, वरिष्ठ लेखाधिकारी – सलाहकार सम्पादक
श्रीमती पूनम शर्मा, हिन्दी अधिकारी – सलाहकार सम्पादक
श्री जुगल किशोर जोशी, वरिष्ठ लेखाधिकारी – सलाहकार सम्पादक
डॉ0 दिनेश शर्मा, सहायक लेखाधिकारी (तदर्थ) – सहायक सम्पादक

प्रतिक्रियाएँ

किसी भी लेखक का लेख, रचनाकार की रचना, कवि की कविता अथवा चित्रकार की चित्रकला को तब तक पूर्ण एवं सफल नही माना जा सकता जब तक की उसे पाठकों तथा प्रशंसकों द्वारा सराहा ना जाये। हमारा कार्यालय प्रत्येक वर्ष अपनी हिन्दी गृह पत्रिका हिमज्योति का सफलतापूर्वक प्रकाशन करता आ रहा हैं। विगत वर्ष 2021 में भी पत्रिका को पूर्ण उत्साह, मेहनत एवं लगन के साथ प्रकाशित किया गया, परन्तु पत्रिका की सफलता का श्रेय पत्रिका में लेख, रचना, कहानी एवं कविता आदि प्रस्तुत करने वालो से अधिक पाठको द्वारा दी गयी महत्वपूर्ण प्रतिक्रियोओं को दिया जाता है। विगत वर्ष की भांति इस वर्ष भी हमारी पत्रिका हिमज्योति का वर्तमान अंक आप सभी पाठकों के समक्ष इस आशय के साथ प्रस्तुत किया जाता है, कि आप सभी बहुमूल्य सुझाव प्रस्तुत कर हमें अनुग्रहित करेगें.....

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित वार्षिक राजभाषा पत्रिका "हिमज्योति" के एकादश अंक की प्रति हमारे कार्यालय को प्राप्त हुई है, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका के आवरण पृष्ठ, रूपसज्जा, छायाचित्र एवं समाहित सभी रचनाएं प्रशंसनीय एवं उच्च स्तर के हैं। विशेष रूप से श्री सरदार सिंह तोमर की "योग से रहे निरोग", श्री संदीप सिंह की "कवि", श्री अजय कुमार पाल की "होली गीत" तथा सुश्री दीपा पवार की "क्यों खुद से न हो प्रीत मुझे" एवं अन्य सभी रचनाएं पठनीय हैं। हिंदी भाषा के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है, इसके लिए आप सभी बधाई के पात्र हैं।

महादिनेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) का कार्यालय
बांद्रा (पूर्व), मुम्बई

आपके द्वारा हिंदी गृह पत्रिका "हिमज्योति" के एकादश अंक की प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक हैं। पत्रिका में समाहित समस्त लेख एवं रचनाएं सरस एवं पठनीय हैं। "मनुष्य की ईश्वर को पुकार", "योग से रहें निरोग", "पंचाचुली की गोद में मुस्कुराता मुनस्यारी", "जीवन सुख", बिटिया का पहला जन्मदिन, "राजभाषा का हिंदी स्वरूप" तथा "मनोकामना पूर्ण करती बीं माता" आदि रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई तथा शुभकामनाएं।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा चण्डीगढ़

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "हिमज्योति" के एकाद्श अंक की प्रति प्राप्त हुई। तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है।

पत्रिका का मुख्य पृष्ठ एवं साज–सज्जा उत्कृष्ट है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं अति प्रासंगिक, ज्ञानवर्धक एवं उच्च स्तरीय है। श्री वी0के0 शर्मा द्वारा रचित आलेख "कार्य में सरल हिंदी के प्रयोग की आवश्यकता" हिंदी को बढ़ावा देने में सहयोग प्रदान करती है एवं "सूचना प्रदान करते समय बरती जाने वाली सावधानियां" काफी ज्ञानवर्धक है। श्रीमती मोनिका सिंह द्वारा रचित कवित "बिटिया का पहला जन्मदिन" बेटियों को प्यार देने का संदेश देती है। बाकी रचनाएं भी अभिव्यक्ति की दृष्टि से श्रेष्ठ हैं। पत्रिका की उत्तरोतर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)–प्रथम मध्य प्रदेश
ऑडिट भवन, झाँसी रोड, ग्वालियर

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी गृह पत्रिका "हिमज्योति" का 11 वाँ अंक प्राप्त हुआ। एतदर्थ धन्यवाद। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर श्री संदीप सिंह, प्रधान महालेखाकार द्वारा रचित काव्य "मनुष्य की ईश्वर को पुकार" प्रशंसनीय हैं। श्री शिवम सिंह द्वारा रचित यात्रा संस्मरण "पंचाचुली की गोद में मुस्कुराता मुनस्यारी" मनोरम लगी। भूमंडलीय तापीकरण के दुष्परिणाम पर आधारित डॉ0 दिनेश शर्मा द्वारा रचित लेख सोचनीय है। इसके अलावा श्री संजीव जखमोला एवं श्रीमती दीपा पवार द्वारा रचित कविता क्रमशः "खोये हुए खत"," "क्यों खुद से न हो प्रीत मुझे" दिल को छू गई। साथ ही श्री प्रशांत किमोठी द्वारा खिंची गई सभी छायाचित्र अत्यधिक आकर्षक है।

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, भुवनेश्वर

आपके कार्यालय की पत्रिका "हिमज्योति" के एकादश अंक की प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। सभी रचनाकारों ने विषय के अनुसार अपनी लेखनी से रचनाओं में बहुत ही सुंदर वर्णन किया है, जो निसंदेह हमारे ज्ञान में वृद्वि करता है। पत्रिका के मुख पृष्ठ पर सुंदरता से भरपूर उत्तराखण्ड राज्य में बर्फ से ढके पहाड़ों का चित्र बहुत ही सुंदर है, जो पत्रिका के मुख पृष्ठ को आकर्षक बनाता है। पत्रिका के अंतिम पृष्ठ पर तो राज्य की सुंदरता अद्वितीय ही हो जाती है। संपूर्ण पत्रिका रंगीन होने के कारण पत्रिका का कलेवर एवं साज–सज्जा बहुत ही सुंदर एवं आकर्षक है। उत्तराखण्ड के विभिन्न दर्शनीय स्थल और कार्यालयी झलकियाँ पत्रिका की सुंदरता में और भी वृद्वि करते हैं। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा के प्रचार–प्रसार का कार्य बहुत ही सराहनीय है। पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मण्डल को बहुत–बहुत बधाई।

पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्ही शुभकामनाओं के साथ पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
गुजरात, राजकोट

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "हिमज्योति" के एकादश अंक की प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष बधाई एवं धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ, साज–सज्जा एवं मुद्रण उत्कृष्ट है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ स्तरीय एवम पठनीय हैं। सभी रचनाकारों को साधुवाद।

नचिकेता ताल, उत्तरकाशी के रमणीय छायाचित्र का प्रकाशन इस अंक की प्रमुख विशेषतओं में से एक है। श्रीमती पूजा त्रिपाठी का कविता "चिरैया" तथा डॉ दिनेश शर्मा का लेख "टोंस का निर्जलीकरण" में क्रमशः गौरेया का संरक्षण तथा जलवायु परिवर्तन और भूतापीय दुष्परिणाम का वर्णन विशेष सराहनीय एवं प्रशंसनीय है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार और कार्मिकों की सृजनात्मक प्रतिभा को विकसित करने में "हिमज्योति" की भूमिका महत्वपूर्ण है। इसी कामना के साथ समस्त सम्पादकीय मण्डल को पुनः बधाई और शुभकामनाएं।

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार
पटना– 800 001

आपके कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका "हिमज्योति" के एकादश अंक की प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में संग्रहित सभी रचनायें प्रभावशाली रोचक एवं उच्चकोटि की हैं। पत्रिका के माध्यम में राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका के इस अंक में सम्मिलित की गयी प्रधान महालेखाकार श्री संदीप सिंह की कविता "मनुष्य की ईश्वर को पुकार", श्री सरदार सिंह तोमर का लेख "योग से रहें निरोग", श्री विनोद कुमार शर्मा का लेख "सूचना प्रदान करते समय बरती जाने वाली सावधानियाँ", श्रीमती दीपा पवार की कविता "क्यों खुद से न हो प्रीत मुझे" एवं श्री बृजभूषण सेमवाल का यात्रा–वृत्तांत "मनोकामना पूर्ण करती हैं बीं माता" विशेष रूप से सराहनीय है।

पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु सम्पादक मण्डल को बधाई व पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक0), राजस्थान
जयपुर

संदर्भित पत्र एवं आपकी कार्यालयी पत्रिका "हिमज्योति" का नवीन संस्करण प्राप्त हुआ। आपकी पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं एवं इसके प्रेषण के संबंध में आभार स्वीकार करें।

पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं समान रूप से उत्कृष्ट एवं उच्च स्तरीय हैं। राजभाषा पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन का मुख्य उदेश्य कार्मिकों में राजभाषा के प्रति निष्ठा उत्पन्न करने के साथ–साथ रचनात्मक अभिव्यक्ति को बल देना होता है जोकि आपकी पत्रिका के प्रत्येक पृष्ठ से दष्टिगोचर होती है। पत्रिका में स्वयं प्रधान महालेखाकार महोदय, श्री संदीप सिंह जी द्वारा की गई काव्य अभिव्यक्तियाँ न केवल अति उत्तम है बल्कि कार्मिकों को राजभाषा के प्रयोग हेतु संबल भी प्रदान करती है। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए लेखकों के साथ ही संपादक मंडल भी विशेष रूप से बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के सम्मानित संपादक मण्डल के सदस्यों ओर हिंदी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी राजभाषा पत्रिका "हिमज्योति" के उज्जवल भविष्य के लिए "सुगंधा" परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
पंजाब, चण्डीगढ़ – 160036



चमोली स्थित रूद्रनाथ (पनार बुग्याल)
छायाकार : प्रशांत किमोठी, खण्डीय लेखाधिकारी-II

अनुक्रमणिका

विधा	विषय वस्तु	रचनाकार	पृष्ठ
आलेख	पर्यावरण की पुकार	पूजा त्रिपाठी	
कविता	हाल–ए–जमाना	डॉ0 दिनेश शर्मा	
कविता	बेटी के नन्हें कदम....	मोनिका सिंह	
कविता	सम्मान	विनोद कुमार शर्मा	
कहानी	अनक्लिकड बचपन	निशान्त वैश्य	
कहानी	ईमानदारी से मिली सौगात	दीपा पवार	
कविता	बेजुबान आँसू	शिवम् लिलहोरी 'बानगी'	
आलेख	हिन्दी एवं भारतीय भाषाएँ	विनोद कुमार शर्मा	
आलेख	कामकाजी नारी के समक्ष चुनौतियाँ	अरविन्द सिंह रावत	
आलेख	देवभूमि उत्तराखण्ड का जनपद रूद्रप्रयाग	बृज भूषण सेमवाल	
कविता	वन्दन	यशपाल सिंह 'यशी'	
आलेख	नादाधीनम् जगत सर्वम्	विक्रान्त कुमार	
आलेख	हिन्दी साहित्य की यात्रा	शिवम् सिंह	

अनुक्रमणिका

विधा	विषय वस्तु	रचनाकार	पृष्ठ
कविता	नीम का पेड़	पूनम शर्मा	
कविता	बोलती तस्वीर	डॉ0 दिनेश शर्मा	
आलेख	दानवीर कर्ण का रोचक प्रसंग	प्रशांत जोशी	
आलेख	ग्लोबल वार्मिंग का बढ़ता खतरा	विनोद कुमार शर्मा	
कविता	मंजिल	अरविंद सिंह रावत	
आलेख	कोरोना डायरीज – भाग 2 डमरू बाजे बंदरु नाचे	शिवम् लिलहोरी 'बानगी'	
कविता	करिश्मा इंसान का	यशपाल सिंह 'यशी'	
कविता	काश.....	मोनिका सिंह	
आलेख	बात डायरी की	शिवम् लिलहोरी 'बानगी'	
कविता	भीगा अहसास	शंशाक गुप्ता	





पर्यावरण की पुकार



पूजा त्रिपाठी
पत्नी श्री नवीन त्रिपाठी
सहायक लेखाधिकारी

"पर्यावरण के अन्तर्गत जीवित एवं गैर जीवित जैसे– वायु, जल, मिट्टी, पेड़–पौधे, जीव–जन्तु, पशु–पक्षी तथा मनुष्य आदि आते हैं।" ये सभी एक दूसरे से एक कड़ी या चक्र के रूप में जुड़े हैं। हमारे आस–पास पहाड़, घने जंगल, नदियाँ आदि मौजूद हैं जो कि प्रकृति की सुन्दरता को दर्शाते हैं।

आज हम आधुनिकीकरण या कहें कि विकास की दौड में जाने–अनजाने प्रकृति को पीड़ा पहुँचा रहे हैं। जिसका नतीजा हमारे सामने हैं। वातानुकूलित इमारतें, सडकें, हाइवे, कारखाने, मॉल, होटल, बढ़ते वाहनों की संख्या शहरीकरण, पेड़ो का कटना, नदियों को मोड़ना सरीखे मानवीय कृत्यों के चलते हम असमय मूसलाधार बारिश, नदियों का उफान, भूस्खलन, बाढ़, गर्म हवा, बढ़ते तापमान, कंपकंपाती ठंड आदि के रुप में खामियाजा भुगत रहे हैं। विज्ञान एवं पर्यावरण केन्द्र के अनुसार सीसा, आयरन, निकल, कैडमियम, क्रोमियम, जिंक जैसे तत्त्वों की नदियों में वृद्धि हुई हैं। इन हानिकारक नदियों का कारण खनन, कबाड तथा उद्योगों से धातुओं का निष्कासन है।

कार्बन डाई आक्साइड, नाइट्रस आक्साइड, मीथेन, क्लोरो–फलोरो–कार्बन आदि ग्रीन हाउस गैसों की सघनता बढ़ रही है और समुद्री जल के अम्लीकरण में वृद्धि हो रही है, जिससे जल की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। ग्रीष्म लहर की आवृत्ति, भषण लू का प्रकोप और चक्रवात, यह सभी बढ़ती ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन को दर्शाते हैं।

बढ़ती गर्मी के कारण नदियों का जलस्तर न्यूनतम आरएल (रीवर लेवल) होता जा रहा है, जिसके कारण विद्युत–उत्पादन भी प्रभावित हो रहा है। साथ ही वनस्पतियों एवं जीव–जन्तुओं को हो रहे निरन्तर नुकसान का पारिस्थितिकी तन्त्र पर भी बुरा प्रभाव पड़ रहा है।

अम्लीय जल और रासायनिक खादों के इस्तेमाल से फसलों की पैदावार तथा उनके स्वाद तथा सुपाच्यता पर भी असर देखने को मिल रहा है। कार्बन, हाइड्रोजन तथा ऑक्सीजन आदि जैसे आवश्यक तत्त्व खत्म हो रहे हैं।

इधर उत्तराखण्ड के देहरादून में भी रिस्पना, बिंदाल, सुसवा नदियां नालों में तब्दील हो चुकी हैं और अपने दर्द की दास्तां कहती नजर आ रही हैं। करोड़ों लीटर सीवेज के साथ ही शहर का कूड़ा–करकट और औद्योगिक इकाइयों का अपशिष्ट समेटेये तीनों नदियां आगे सौंग नदी में मिलती है। इसका जल कभी पीने योग्य था लेकिन अब न तो सिंचाई लायक बचा है और न ही जंगली जानवरों के पीने योग्य।

राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन के प्रयासों के बावजूद आज राष्ट्रीय नदी गंगा और यमुना के जल में घुलनशील ऑक्सीजन की मात्रा निर्धारित मानको ंके अनुरूप नहीं रह गई है। वहीं बदरीनाथ धाम से हरिद्वार तक लगभग 31 सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट लगाए जाने के बाद भी हरिद्वार में गंगा नदी के पानी की गुणवत्ता को "बी" श्रेणी में रखा गया है अर्थात यह पीने योग्य पानी नहीं है।

आँकडे बताते हैं कि विकास की तीव्रता ने हमारी धरती के पोर्टेबल वाटर लेवल को 3 प्रतिशत से घटाकर 2.5 प्रतिशत कर दिया है। असम/मेघालय में मूसलाधार बारिश से आई भीषण बाढ़, पहाड़ी इलाकों में लगातार भूस्खलन, पिघलते ग्लेशियर, यह सब जल संकट तथा पर्यावरण असंतुलन को दर्शाते हैं।

बढ़ती धूल, ब्लैक कार्बन और ग्लोबल वार्मिंग की वजह से ग्लेशियर पिघल रहे हैं। लू से होने वाली मृत्यु के लिए तापमान में वृद्धि एवं हवा में आर्द्रता होना भी बड़ा कारण है, जिससे हीट वल्ब टेंपरेचर स्थिति जो कि 35 डिग्री सेल्सियस है, उसे भी पार कर जा रही है। यह असहनीय और गम्भीर स्थिति है।

5 जून को मनाए जाने वाले पर्यावरण दिवस का वर्ष 2022 में स्लोगन है "पृथ्वी एक है"। हमारा देश वसुधैव–कुटुंबकम् के सूत्र पर चलता है। पूरी पृथ्वी पर रहने वाले जीव एक कुटुंब के समान है, ऐसा मानने वाला हमारा देश प्राचीनकाल से ही किसी न किसी रूप में नदियों, पेडों और पृथ्वी को पूजता रहा है। अतः इस सन्दर्भ में प्रकृति किसी जाति, धर्म, वर्ग विशेष की नहीं बल्कि सबके लिए समान है। हम सब को मिलकर इसकी रक्षा करनी चाहिए। जल के अपव्यय को रोकने के लिए हमारे हिन्दू पंचांग में ज्येष्ठ वर्ष के तीसरे माह, जिसमें ऊष्मा काफी प्रचण्ड रहती है, की एकादशी को निर्जला व्रत रखने का चलन है। यह दिन जल के संरक्षण को समर्पित है और निर्जला एकादशी के दिन जल के पात्र का भी दान दिया जाता है। केन्द्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्रालय द्वारा 75 माइक्रोन तक की प्लास्टिक प्रतिबंधित की गई है, इस पर पूरी तरह अमल किया जाना आवश्यक है। जहाँ पर्यावरण असन्तुलन के कारण हमारे देश में पानी की समस्या से लोग जूझ रहे हैं, वहीं जगहों पर बरसात के पानी को बेरियां, रेजाणी, सेजे, झारे आदि जल स्त्रोतों द्वारा संरक्षित किया जा रहा है।



अतः विभिन्न कारणों को देखते हुए हमें पर्यावरण के संरक्षण और संवर्द्धन के लिए प्रयासरत् होना आवश्यक है। घरों के आस–पास पौधारोपण करें, बीज बम बनाकर बारिश या मानसून के दौरान जंगलों में फेकें। जिन पौधों को रोपें, उनको संरक्षित करें। जल स्त्रोतों की साफ–सफाई पर भी ध्यान दिया जाए।

हाल–ए–जमाना



डॉ0 दिनेश शर्मा
सहायक लेखाधिकारी (तदर्थ)



जमीं को फिर से हरा बनाना होगा,
हर हाल में नए पेड़ों को उगाना होगा।।
बंजर धरती को फिर लहलहाना होगा,
कंक्रीट के जंगल को हराना होगा।।
यह बानगी भर है आने वाले कल की,
इससे भी बदतर हाल–ए–जमाना होगा।।

बेटी के नन्हें कदम....



मोनिका सिंह
सहायक लेखाधिकारी

मेरी गोद से फिसल कर नन्हें कदमों से भागती,
मेरे सपनों को नापने लगी है,
हाँ मेरी बिटिया तू मुझे मुझ–सी लगने लगी है।

अपनी पसंद नापसंद सब जानने लगी है,
और अपने सारे काम खुद से करना सीखने भी लगी है,
हाँ मेरी बिटिया तू मुझे मुझ–सी लगने लगी है।

मेरी सैन्डल पहनने से लेकर मेरे पर्स को लेकर भी चलने लगी है,
और मेरे ऊपर अपना हक जताते मुझे सिर्फ अपना बताने लगी है,
हाँ मेरी बिटिया तू मुझे मुझ–सी लगने लगी है।



मेरे दफ्तर से घर आते ही मुझसे लिपट जाती है,
सारे दिन की दूरी को झट मिटाना जानने लगी है,
हाँ मेरी बिटिया तू मुझे मुझ–सी लगने लगी है।

गुस्सा प्यार जिद सब जताना खूब जानने लगी है,
और इनके ही दम पर अपनी बाते भी मनवाने लगी है,
हाँ मेरी बिटिया तू मुझे मुझ–सी लगने लगी है।

ये तो रही तेरी सारी बात अब बताती हूँ तूझे अपने कुछ राज,
तेरे साथ अपना बचपन फिर से जीने लगी हूँ मैं
और हर बीतते साल के साथ जिन्दगी को जीना सीखने लगी हूँ।

अनक्लिकड बचपन



निशान्त वैश्य
सहायक लेखाधिकारी

आज मैं बेहद खुश एवं उत्साहित हूँ, क्योंकि आज हर बार की तरह एक बार फिर मेरी बहन रश्मि अपने परिवार के साथ लन्दन से दिल्ली रक्षाबन्धन पर राखी बाँधने आ रही है और मैं भी हर बार की तरह उसके स्वागत के लिए हवाई–अड्डे पर जा रहा हूँ। आज के दिन जब भी मैं यह रास्ता तय करता हूँ तो न जाने क्यों दस वर्ष पहले गाड़ी चलाते वक्त का एक दृश्य मेरी आँखों के सामने आ जाता है।

उस रोज मैं ट्राफिक सिग्नल के लाल से हरा होने का इंतजार कर रहा था कि उस दौरान मेरी नजर फुटपाथ पर पड़ी और ऐसा लगा कि जैसे मैंने अपने बचपन को उस 90 सैकेण्ड में जी लिया हो। मेरी आँखों के सामने एक बच्चा जिसकी उम्र लगभग सात वर्ष रही होगी और साथ में थी एक 4–5 वर्ष की आयु की एक लड़की जो शायद उसकी बहन रही होगी। उन्हें देखकर लग रहा था कि जैसे उन्होंने पिछली रात फुटपाथ पर सोकर ही बिताई हो। हो सकता है उनके माता–पिता भी हमारे माता–पिता की तरह उन दोनों को बचपन में छोडकर चले गये हों। उस छोटी–सी बच्ची की खुशनुमा मुस्कुराहट ने मुझे मानों अपनी बहन रश्मि के बचपन से मिला दिया हो। मैं और रश्मि भी ऐसे ही दिल्ली के किसी फुटपाथ पर सोकर अपनी रातें बिताया करते थे जब तक कि 'बाल–विकास शिक्षा निकेतन' ट्रस्ट ने हम दोनों को आश्रय देकर नया जीवन नहीं प्रदान किया था। मुझे आज भी याद है कि उस लडके के पास एक डिब्बा था जिसमें शायद बूट–पालिश थी, मेरे बगल में बैठे नेगी जी को भी समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या हो सकता है। बहरहाल मुझे तो वह बूट–पॉलिश ही लगी और उसके साथ कुछ जूता मरम्मत का सामान भी था। मुझे लगा कि उन दोनों की जीविका उसी से चलती हो और शायद लड़के ने रक्षाबंधन का गिफ्ट भी इसी की कमाई से खरीदकर लिया हो। लेकिन जो तोहफा उनकी मुस्कान आस–पास के वातावरण में हर्षोल्लास बिखेर रही थी, वह अनमोल था। उनके इस प्रेम को देखकर मुझसे रहा न गया और मैंने अपने मोबाईल फोन का कैमरा उनके चेहरों के सामने रख दिया, वे दोनों भी नई पीढ़ी के बच्चों की तरह स्मार्ट थे। तो झट से दोनों ने एक–दूसरे को गले लगाकर एक सुन्दर सी मुस्कान दी और मैंने उसे अपने मोबाईल में और दिल में हमेशा–हमेशा के लिए कैद कर लिया। आज भी जब मैं इस पिक्चर को देखता हूँ तो सोचता हूँ न जाने आज वे दोनों कहाँ होंगे? मेरे भीतर पश्चाताप का भाव भी है कि काश मैनें इन दोनों बच्चों को अपने साथ उसी गाड़ी में बिठा लिया होता। ठीक उसी तरह जैसे मुझे और मेरी बहन को तीस बरस पहले किसी ने आश्रय दिया था। लेकिन फिर तस्वीर को देखते हुए खुद को यह कहकर समझा लेता हूँ कि जो बच्चे अपने बचपन में इतने जीवन्त और एक–एक पल भी खुशियाँ समेटने वाले रहे हो वो आज जरूर ही समाज में किसी बुलन्दी को हासिल कर चुके होंगे। इन यादों के साथ चलते हुए हमेशा की तरह आज भी मेरे घर से हवाई–अड्डे तक का सफर यूँ ही निकल गया।



आज मैं रक्षाबन्धन के उपहार के रूप में इसी तस्वीर को एक बड़े से फ्रेम में सजाकर अपनी बहन को दे रहा हूँ। दरअसल इस तस्वीर ने अपने भीतर हमारे बचपन के बिखरे रंगों को बखूबी समेटा हुआ है। यही है – हम दोनों का 'अनक्लिकड बचपन'।

ईमानदारी से मिली सौगात



दीपा पवार
सहायक लेखाधिकारी (तदर्थ)

रात भर राजू यह सोचकर सो नहीं पा रहा था कि क्या कल का दिन भी और दिनों की तरह परेशान करने वाला उदासी भरा और बेरूखा होगा या फिर कल कुछ ऐसा होगा कि वह अपनी नन्हीं बहन राधा के चेहरे पर थोडी हँसी ला पाएगा। राजू और राधा के सिर से पिता का साया तो पहले ही उठ गया था, माँ किसी तरह दोनों बच्चों को मेहनत–मजदूरी करके पाल रही थी। आठ साल की नन्हीं उम्र में जब बच्चे खिलौनों से खेलते हैं, माँ–बाप से नई–नई फरमाईशें करते हैं, उस उम्र में राजू गरीबी से, भूख समाँ–बाप से नई–नई फरमाईशें करते हैं, उस उम्र में राजू गरीबी से, भूख से और



तकलीफों से लड़ना सीख रहा था। गरीबी उसे वक्त से पहले बड़ा कर रही थी और उसने दुनियादारी, सुख–दुख को समझना शुरू कर दिया था। राजू सुबह माँ के साथ एक कंस्ट्रक्शन साइट पर ईंटें और सीमेंट ढोता, तो दोपहर को एक मोची के पास जूते पॉलिश करता। रात के वक्त वह किसी भी दुकान या ठेले वाले का सामान बिकवाता, जिससे दुकानदार उसे कुछ रूपये देने के साथ–साथ खाने–पीने का सामान भी दे देते थे। खाने–पीने की चीजें जब वह घर लाता, तो राधा बहुत खुश होती। उसे लगता मानों उसे कितनी बडी खुशी दे दी उसके भाई ने। इधर राधा भी कम समझदार नहीं थी। वह सब समझती थी। गरीबी, लाचारी, माँ की परेशानी और भाई की कड़ी–मेहनत, उसे सबका पता था। इसलिए वह चुपचाप बिना कभी कुछ माँगे आसमान तले भाई का हाथ पकड़े, माँ से चिपके नींद के आगोश में चली जाती। पर उस रात राजू को नींद नहीं आ रही थी। अगली सुबह राखी थी और राजू के पास अभी मुश्किल से पचास रूपये भी जमा नहीं थे। होते भी कैसे मोची से जो पैसे मिलते थे, वह माँ को दे देता था। कुछ पैसे बचाता तो राधा के लिए कुछ न कुछ ला देने का जी करता। पर ये भी रोज कहाँ हो पाता था। चाँद को निहारते–निहारते वह इसी उधेड़बुन में था कि अपनी इकलौती नन्हीं बहन को कल वह ऐसा क्या दे कि वह खुश हो जाए। देखते–देखते रात का तीसरा पहर शुरू हो गया था, पर राजू गहरी सोच में ही डूबा था। सोचते–सोचते कब उसकी आँख लग गईउसे पता ही नहीं चला।सुबह उठते ही रोज की तरह काम पर जाने के लिए राजू पर चिल्लाती माँ की आवाज सुनाई दी। राधा को भी जल्दी से उठाकर माँ ने हाथ–मुंह धुलवाया और उसके थैले में दो रोटी और प्याज रख दी। राजू से कहा कि बहन को साथ ले आना, आज मुझे जल्दी जाना हैं। उदास राजू उठा, मुँह हाथ धोया और राधा का हाथ पकड़े साइट की तरफ चल दिया। अचानक उसे याद आया कि मोची चाचा ने उसे सुबह से ही बुलाया था क्योंकि आज उन्हें अपनी बहन के यहाँ राखी बँधवाने जाना था। तो राधा का हाथ पकड़े वह सीधा मोची चाचा के ठिकाने पर पहुँच गया। जाकर उसने सामान जमाया और राधा को पास बैठने का इशारा किया। अब दोनों भाई–बहन ग्राहक के आने का इंतजार करने लगे।

करीब एक घण्टे बाद एक गाड़ी उनके सामने आकर रुकी। उसमें से बेशकीमती कपड़े पहने एक साहब उतरे और राजू की तरफ अपने महँगे जूते बढ़ा दिये। राजू समझ गया और बिना कुछ पूछे जूतों पर पॉलिश लगाकर उन्हें चमकाने में जुट गया। साहब ने वक्त काटने के लिए जेब से मोबाइल निकाला और अपनी बहन को फोन लगाकर देर से पहुँचने के लिए माफी माँगते हुए कहा –"बस थोड़ी ही देर में पहुँच रहा हूँ।"

इस दौरान हजार का एक नोट उनकी जेब से निकलकर जमीन पर आ गिरा। साहब फोन पर बिजी थे और राजू पूरी लगन और ईमानदारी से अपने काम पर। तभी उसके मन में एक आस जगी – क्या पता साहब जूते अच्छे से चमकाने पर खुश होकर उसे कुछ बक्शीश ही दे दें। जो मोची चाचा की नहीं, उसकी होगी। उस पैसे से वह राधा को राखी बँधवाते वक्त कुछ दे पाएगा। इसी उम्मीद से भूखे–पेट वह जूतों पर अपनी जोर–आजमाइश करने में लगा था। इधर अचानक राधा का ध्यान हजार के नोट पर पडा। उसने वह नोट उठाकर भाई को दे दिया। राजू को इतनी समझ थी कि यह हजार रुपये का नोट है, वह पढ़ा–लिखा तो नहीं था, लेकिन काम करते–करते नोटों की पहचान और उनकी कीमत उसे समझ आ गई थी। नोट पकड़ते ही उसने साहब की तरफ देखा। साहब अब भी अपनी बहन से तोहफे के बारे में उसकी पंसद पूछ रहे थे। राजू ने उन्हें देखा, फिर राधा की तरफ देखा। फिर पता नहीं क्या सोचकर नोट साइड में रखकर अपना काम खत्म किया।

राजू ने ऐसा करने से इंकार कर दिया। तो साहब ने राधा की तरफ एक राखी बढाई और बोले –"कार में मेरा बेटा बैठा है, तुम उसे जाकर यह राखी बांध दो। हमने अपनी प्यारी बेटी को एक लाईलाज बीमारी के चलते दो साल की उम्र में ही खो दिया था। वह होती, तो आज तुम्हारे बराबर ही होती।" इस पर राधा ने राजू की तरफ देखा, तो राजू ना नहीं कर सका। राधा ने कार में बैठे साहब के बेटे की, जो चल–फिर नहीं सकता था, अपंग था, कलाई पर राखी बांध दी। साहब ने गाड़ी में रखा मिठाई का डिब्बा और भेंट स्वरूप वह हज़ार रुपये का नोट राधा को थमा दिया और मन ही मन दोनों को ढेर सारा आर्शीवाद देकर साहब ने कार आगे बढ़ा दी।

अब तो राजू की खुशी सातवें आसमान पर थी। आज उसने राधा को नहीं, बल्कि राधा ने उसे राखी का तोहफा दे दिया था। रक्षाबन्धन का यह दिन दोनों भाई बहनों के लिए बहुत ही खास बन गया था। राजू ने आगे बढ़कर राधा को गले से लगा लिया। दोनों के चेहरों पर खिलखिलाहट थी। राधा को भी अहसास था कि आज दोनों के साथ कुछ बहुत अच्छा हुआ है। वह झट से भाई के गले लग गई। देर तक दोनों एक दूसरे को गले लगाए रहे और मुस्कुराते–हँसते रहे। उनकी आँखों में खुशी की रौनक थी और चेहरे ईमानदारी के नूर से चमक रहे थे।

काम खत्म कर उसने साहब को आवाज दी –"जूते तैयार हैं, पहन लीजिए, साहब!" साहब ने चमचमाते जूते देखकर एक लम्बी सी मुस्कान दी और राजू से पूछा कितने पैसे हुए। राजू ने पचास रुपया बताया। साहब ने सौ का नोट निकालकर राजू को दिया तो राजू ने 1050 रूपये उनकी तरफ बढ़ा दिये। साहब को हैरानी हुई –"क्या दे रहे हो, पढे–लिखे नहीं हो क्या?" राजू ने जवाब दिया "साहब, पढा लिखा नहीं हूँ पर नोट का रंग पहचानता हूँ। यह आपकी ही जेब से गिरा है, जिसे मेरी बहन ने उठा लिया था"। साहब को राजू की ईमानदारी बहुत पसंद आई। उसने राजू से उसकी उम्र पूछी। जानकर उसे दुख हुआ कि आठ साल का बच्चा छोटी बहन को साथ लिए इतनी मेहनत कर रहा है। उसने राजू को वह नोट रखने को कहा और कहा कि आज राखी का दिन है, यह नोट तुम दोनों ने मिलकर कमाया है। आज अपनी बहन को उसकी पसंद का कोई तोहफा दिलाओ, ताकि तुम दोनों के लिए यह रक्षाबन्धन खास हो जाए।



उत्तराखण्ड राज्य का पुष्प–ब्रह्मकमल

सम्मान



विनोद कुमार शर्मा
वरि0 लेखाधिकारी (सेवानिवृत्त)

सीमाओं पर खड़ा सैनिक
है सम्मान का हकदार
दिन–रात रक्षा करता हमारी
हमेशा रहता मुस्तैद तैयार।

गर्मी–सर्दी हो या फिर हो बरसात
तूफानी हवाएँ चलें या फिर हो बर्फबारी
नहीं डिगा सकते हौसला उसका
है हरदम की यह तैयारी।

जान हथेली पर रखकर
करता जो सीमाओं की चौकसी
जिसके कारण हम आज सुरक्षित
है यह हम सब की खुशी।

आओ हम सब मिलकर बढ़ाएँ हौसला उसका
करें अभिनंदन और करें जय–जयकार
है तमन्ना हम सबकी यही
मौका मिले हमें यह बार–बार।।



बेजुबान आँसू



शिवम् लिलहोरी 'बानगी'
लेखाकार

कभी खुशी में
कभी गम में
कभी खास पलों में
तो कभी बस यूँ ही
इन्हे आँसू नहीं
मोती कहिये जनाब
पलकों की सीपियों से
रूखसारों पर लुढ़क आते हैं।



कभी लबों को छूकर
लाली बहाते हैं
कभी–कभी कंधे
गीले कर जाते हैं
प्यार भरी थपकी मिले
तो टूटकर बिखर जाते हैं
ये बेजुबान आँसूभी ना
उनकी दिल की सारी बातें
बिन कहे ही हमें समझा जाते हैं।।

आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।



महावीर प्रसाद द्विवेदी

हिन्दी एवं भारतीय भाषाएँ



विनोद कुमार शर्मा
वरि0 लेखाधिकारी (सेवानिवृत्त)

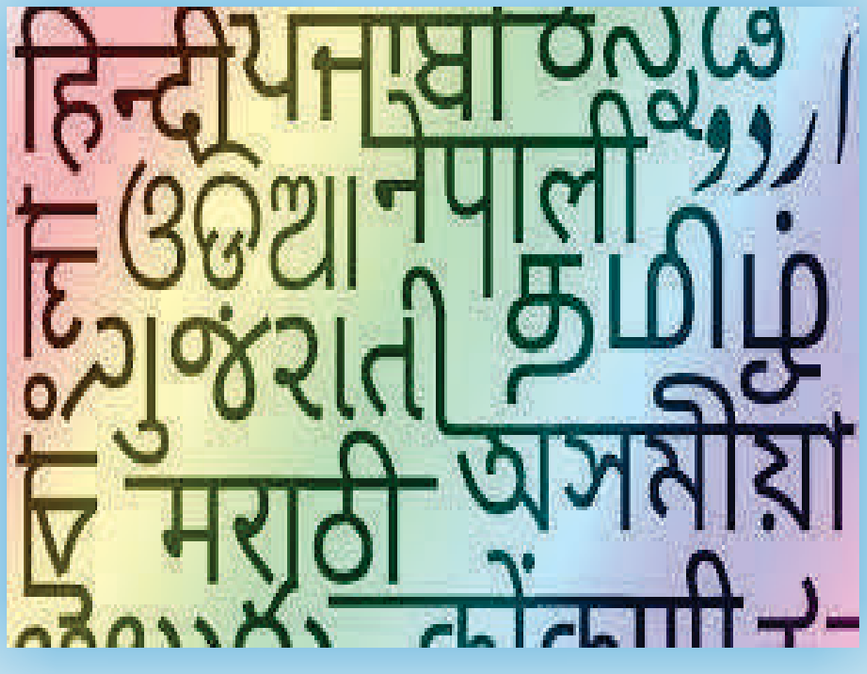
भारत एक बहुभाषी देश है। हमारे देश की लगभग 80 प्रतिशत आबादी हिन्दी भाषा को अच्छे से समझती है, अच्छे से बोलती है तथा अच्छे से लिखती है। भारत बहुभाषी देश होने के साथ ही साथ बहुसंस्कृति वाला देश भी है। हमारे देश में अनेक भाषाएँ हैं जिनके जानने व समझने वाले लोगों की अपनी समस्याएँ है। इन्हीं समस्याओं के कारण हिन्दी को आज तक पूरी तरह से स्थापित नहीं किया जा सका है। हमारे देश में विभिन्न भारतीय भाषाओं की आपसी दूरी को कम करने तथा उन्हें एक–दूसरे के नज़दीक लाने का प्रयास निरंतर जारी है। समस्त भारतीय भाषाओं को नज़दीक लाने की पहल किया जाना आज के समय की आवश्यकता भी है। हालांकि हमारे देश की सरकार द्वारा सभी भारतीय भाषाओं को बढ़ाने के प्रयासों में कोई कमी नहीं रही है। लेकिन फिर भी हम आज तक समस्त भारतीय भाषाओं के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करने में सफल नहीं हो पाए हैं।

देश में हिन्दी एवं अन्य सभी भारतीय भाषाओं के मध्य समन्वय स्थापित किया जाना इसलिए भी आवश्यक है ताकि अन्य भारतीय भाषाओं के रचनाकारों के मनोविचारों की जानकारी अन्य भाषा–भाषियों को भी हो सके। इसके साथ ही हिन्दी की पुस्तकों का अन्य भारतीय भाषाओं में बड़े स्तर पर अनुवाद किया जाना अपेक्षित है तथा उसी प्रकार अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध साहित्य का भी हिन्दी में अनुवाद करने की आवश्यकता है। इससे देश का एक बड़ा पाठक वर्ग अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य से भी अवगत होकर अपने ज्ञान के भंडार को बढ़ा सकेगा तथा भारतीय भाषाओं के बीच की दूरी भी कम हो सकेगी। हिन्दीभाषी लोग भी अधिक से अधिक भारतीय भाषाएँ सीखें, इसके लिए हिन्दीभाषी क्षेत्रो में अन्य भारतीय भाषाओं को सिखाने हेतु द्वार खोले जाने चाहिए।

हिन्दी का किसी स्थानीय या भारतीय भाषा से कोई मतभेद नहीं है। बल्कि हिन्दी का दिल तो इतना बड़ा है कि उसने अन्य भारतीय भाषाओं के अनेकों शब्दों को खुले दिल से स्वीकार करके अपनाया है। हिन्दी सह–अस्तित्व के सिद्धांत में विश्वास करते हुए सभी भारतीय भाषाओं को सखी के रूप में अपने साथ लेकर चलने में यकीन रखती है। हमारे देश को एक सूत्र में पिरोने वाली भाषा हिन्दी ही है। वैश्वीकरण के इस दौर में जब हमारे देश के साथ ही साथ पूरी दुनिया में भी आज जहाँ अंग्रेजी ने अपनी मजबूत जड़े जमा ली हैं, फिर भी गंभीर प्रयास अनवरत रूप से जारी रहने पर हमारे देश में हिन्दी को पूरी तरह से अंग्रेजी का विकल्प बनाया जा सकता है। साथ ही साथ अन्य भारतीय भाषाओं को भी समृद्ध एवं मजबूत करने के लिए वांछित प्रयास किए जाने की आवश्यकता है। सभी भारतीय भाषाओं में समन्वय स्थापित होने से तथा साहित्य के आदान–प्रदान से शब्दकोश और मजबूत होगा। इसके लिए आवश्यक है कि स्थानीय भाषाओं के शब्दों को स्वीकार करके हिन्दी को और अधिक लचीला बनाया जाए जिससे कि इसका व्यापक प्रचार–प्रसार हो सके। हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में उच्च शिक्षण व्यवस्था एवं विज्ञान तथा तकनीकी विषयों पर हिन्दी पत्रिकाओं की उपलब्धता अधिक से अधिक सुनिश्चित करने हेतु भरसक प्रयास किए जाने चाहिए।

हमारे देश में हिन्दी जनसाधारण की भाषा है। हिन्दी सरल होने के साथ ही साथ इसका साहित्य भी समृद्ध है। हिन्दी सीखना आसान है। बड़ी संख्या में दक्षिण भारतीय छात्र हिन्दी पढ़ते हैं। हिन्दी की सरलता एवं सहजता का अनुमान मात्र इतने से ही लगाया जा सकता है कि हमारे देश के हिन्दीभाषी राज्यों में दक्षिण भारतीय उच्चाधिकारी बड़ी संख्या में पदस्थापित है तथा वे कुछ ही समय के प्रयास के पश्चात् ही जनता से हिन्दी में संवाद करने तथा हिन्दी समझने में अपने आपको समर्थ अनुभव करते है। अतः हमें सामान्य जनमानस के मन में व्याप्त भ्रान्तियों जैसे कि अंग्रेजी भाषा ही रोजगार के मामले में उनके बच्चों को आगे लेकर जा सकती है या फिर अंग्रेजी जानने वालों का समाज में कोई अलग स्थान है आदि, कोई हो तो, को दूर करके हिन्दी को मजबूती प्रदान करते हुए अंग्रेजी के विकल्प के तौर पर पूरी तरह अपनाते हुए हिन्दी के प्रति क्षेत्रीय पूर्वाग्रह को समाप्त करके इसे देश की भाषा बनाना होगा।

हिन्दी तब तक पूरी तरह मजबूत नहीं होगी जब तक हम इसे लचीला, लोकोपयोगी तथा सरकारी कामकाज की भाषा नहीं बनाएँगे। सरकारी कामकाज की भाषा के रूप में पूरी तरह स्थापित करने के मार्ग में जो भी दिक्कतें है उन्हें दूर किया जाना चाहिए। उक्त को दृष्टिगत रखते हुए कार्मिकों को उनके द्वारा किए जाने वाले कामकाज को केन्द्रित करते हुए उचित प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए। प्रशिक्षण के पश्चात् हिन्दी में कामकाज की प्रगति पर निगाह रखने हेतु निरंतर कामकाज की निगरानी की जानी चाहिए। इस प्रकार प्रबल इच्छाशक्ति और दृढ़ संकल्प के साथ हिन्दी को अपनाने से ही इसका व्यापक प्रचार–प्रसार संभव हो सकेगा।



कामकाजी नारी के समक्ष चुनौतियाँ



अरविन्द सिंह रावत
लेखाकार

प्राचीन काल से ही हमारा समाज पुरूष प्रधान रहा है। जिसमें पुरूष के कंधों पर सभी प्रकार की जिम्मेदारी रहती है। चाहे वे वित्तीय हो या किसी अन्य प्रकार की। इसके साथ ही महिलाओं पर घर की सारी जिम्मेदारियाँ हेाती हैं। जिसमें बच्चों की देखभाल से लेकर घर के सभी कार्यों का सम्पादन सम्मिलित है। किन्तु आधुनिक समाज में महिलाओं की भूमिका में तेजी से बदलाव हुए हैं। जिसमें आज वे पुरूषों के साथ कदम से कदम मिलाकर के नए समाज का निर्माण कर रही हैं। आज के बदलते परिदृश्य में नारियाँ प्रत्येक क्षेत्र में खुद को साबित कर रही हैं। वहीं उनके समक्ष कई प्रकार की चुनौतियाँ भी हैं।

चूँकि हमारा समाज काफी समय तक पुरूष प्रधान समाज रहा है, इसलिए वह महिलाओं के कार्यक्षेत्र के बढ़ते दायरे स्वीकार करने में हिचकता दिखता है। समाज की यह हिचक नारी के समक्ष कार्यक्षेत्र में आने वाली एक बड़ी चुनौती है। आज भी घर की सभी जिम्मेदारियों को नारी द्वारा ही सम्पादित किया जाता है। वे अपने बाहरी कार्यों के साथ–साथ गृह कार्यों का भी निर्वहन करती हैं। जिसमें प्रायः उनकी मदद नहीं की जाती है। यह आम धारणा है कि महिलाएँ ही घर के कार्यों को करेंगी क्योंकि ऐसा पहले से चला आ रहा है। नतीजतन कामकाजी महिलाओं की बाहर और घर दोनों ही कार्यों को करना पड़ता है। इस तरह निरन्तर व्यस्तता और अथक परिश्रम से महिलाओं के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। चूंकि आज के आधुनिक वात



में महिलाएँ पुरूषों के साथ–साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ना चाहती हैं तथा एक नए समाज के निर्माण में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करना चाहती हैं। ऐसे में यह हमारी नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी बनती है कि हम सब मिलकर एक ऐसे वातावरण का निर्माण करें जहाँ कामकाजी महिलाओं के समक्ष आने वाली विभिन्न प्रकार की चुनौतियों को समाप्त किया जा सके। ऐसा नहीं है कि ये चुनौतियाँ केवल हमारे देश में ही हैं। यह समस्या लगभग प्रत्येक विकासशील देश की समस्या है। इस से पार पाने के लिए एक बेहतर वातावरण तैयार करने की आवश्यकता है जिसके लिए सभी देश अपने स्तर पर रणनीतियाँ बनायें ताकि महिलाओं को समानता का उचित अवसर मिल सके और वे समाज के निर्माण में अपनी भूमिका निभा सकें।

हमारी सरकारों द्वारा भी इस सम्बंध में समय–समय पर नीतियां बनाई गई हैं। जिसमें निजी क्षेत्र व सरकारी क्षेत्र में काम करने वाली महिलाओं के लिए अनेक कल्याणकारी प्रावधान लाए गए हैं। हमें भी अपने स्तर पर काम करने की आवश्यकता है ताकि महिलाओं का कार्यक्षेत्र घर के भीतर तक ही सीमित रखने के बारे में समाज में व्याप्त बरसों पुरानी धारणाओं को एक व्यापक जनजागरुकता के माध्यम से तोड़ा जा सके। ऐसा करके ही हम कामकाजी महिलाओं के समक्ष आने वाली चुनौतियों को कम कर पाने में सफल ही पाएँगे।

देवभूमि उत्तराखण्ड का जनपद रूद्रप्रयाग



बृज भूषण सेमवाल
वरिष्ठ लेखाकार

उत्तराखण्ड राज्य को तपोभूमि कहा जाता है क्योंकि यह भूमि अनादिकाल से देवों की तपस्थली रही है। मन्दाकिनी और अलकनन्दा के संगम में बसा रूद्रप्रयाग इसी देवभूमि उत्तराखण्ड राज्य का एक जनपद है। यहाँ के प्राचीन रूद्रनाथ जी के मन्दिर में भगवान शंकर की रूद्ररूप में पूजा की जाती है। इसी से इस जनपद का नाम रूद्रप्रयाग पड़ा। महर्षि नारद जी ने यहाँ कई वर्षों तक तपस्या की थी। रूद्रप्रयाग से दो मार्ग निकलते हैं। एक मार्ग बाबा केदारनाथ जी धाम के लिये, जो यहाँ से मात्र 48 किमी0 की दूरी पर स्थित है और दूसरा मार्ग भगवान बद्री विशाल धाम के लिये, जो यहाँ से 140 किमी0 की दूरी पर है। रूद्रप्रयाग में अनेक पौराणिक महत्त्व के स्थान हैं, जिनमें से कुछ का वर्णन इस आलेख में किया जा रहा है –

अगस्त्यमुनिः महर्षि अगस्त्य ने यहाँ कई वर्षों तक तपस्या की थी, जिस कारण इस स्थान का नाम अगस्त्यमुनि पड़ा। यह रूद्रप्रयाग से मात्र 19 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।



मद्महेश्वर : मद्महेश्वर महादेव का मन्दिर रूद्रप्रयाग जनपद के ऊखीमठ तहसील में स्थित है। यह रांसी गांव से 18 किलोमीटर की दूरी पर शिव का प्राचीन मन्दिर है। यहाँ शिव के बैल रूप के मध्य भाग यानि नाभि की पूजा की जाती है। यह मध्यमहेश्वर कालांतर में मद्महेश्वर नाम से जाने लगा। पंचकेदार में मध्यमहेष्वर को दूसरा केदार कहा जाता है। यह भी मान्यता है कि जब पाण्डवों पर गोहत्या का पाप लग गया था तो पाप से मुक्ति पाने के लिये वे भगवान शिव के पास गये। लेकिन शिव उनसे बहुत क्रोधित थे शिव ने बैल का रूप धारण कर लिया। भगवान शिव को बैल रूप में भीम ने पहचान लिया वह उस बैल (शिव) को पकड़ने लगे। जिस स्थान पर पकड़ा, बैल का वह भाग वहीं पर रह गया। उस स्थान पर शिव मन्दिर का निर्माण कर शिवलिंग स्थापित करके आगे की ओर चल पड़े। यहीं पर मध्यमहेश्वर भगवान की पूजा की जाती है।



तुंगनाथ : रूद्रप्रयाग जिले की ऊखीमठ तहसील के तुंगपर्वत पर स्थित तुंगनाथ मन्दिर 3680 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। पंच केदार में इस मन्दिर को तृतीय केदार नाम से जाना जाता है। यहाँ शिव के हृदय और भुजाओं की पूजा की जाती है। कहा जाता है कि पार्वती जी ने विवाह से पूर्व शिवजी को प्रसन्न करने के लिये यहाँ पर तपस्या की थी। यह मन्दिर प्रसिद्ध पर्यटक स्थल चोपता से मात्र 3 किलोमीटर दूरी पर है। यह मन्दिर जनवरी–फरवरी माह में बर्फ की चादर से ढका रहता है। इसे "गढ़वाल का स्विट्जरलैण्ड" भी कहा जाता है।

चन्द्र शिला : तुंगनाथ मन्दिर से कुछ दूरी पर चन्द्रशिला मन्दिर स्थित है। यह मन्दिर भगवान राम तथा चन्द्रदेव के नाम से प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि राजा दक्ष की 27 पुत्रियों का विवाह चन्द्रदेव से हुआ था लेकिन चन्द्रदेव केवल रोहिणी से अधिक प्रेम करते थे। जिससे नाराज होकर अन्य 26 पुत्रियों ने अपने पिता दक्ष से चन्द्रदेव की शिकायत की थी तो राजा दक्ष ने चन्द्रदेव को समझाया। लेकिन जब चन्द्रदेव नहीं माने तो दक्ष ने उन्हें क्षय रोग का श्राप दे दिया। तब श्राप से मुक्त होने के लिये चन्द्रदेव ने इस स्थान भगवान शिव की तपस्या की और शिवजी ने प्रसन्न होकर उन्हें क्षय रोग से मुक्त कर दिया। एक मान्यता यह भी है कि रावण का वध करके भगवान राजचन्द्र जी चन्द्रशिला में तपस्या की थी। ब्रह्महत्या (रावण का वध) के पाप से मुक्ति पाने के लिये यहाँ पर तपस्या की थी। तब शिवजी ने प्रसन्न होकर राम को ब्रह्महत्या के पाप से मुक्त कर दिया। आज भी लाखों तीर्थयात्री दर्शन करने तथा जीवन में जाने–अनजाने किये पापों से मुक्ति पाने तथा मन की शान्ति की तलाश में यहाँ आते हैं।

त्रिजुगी नारायण : त्रिजुगी नारायण मंदिर रूद्रप्रयाग जिले की केदारनाथ घाटी के सोनप्रयाग से मात्र 12 किमी0 की दूरी पर है। भगवान नारायण को समर्पित इस मंदिर में भगवान शिव और पार्वती के विवाह के लिये वामन अवतार लिया था क्योंकि इन्द्र देव को डर था कि कहीं राज बलि सौ यक्ष पूरा करके इन्द्रासन ना लेले। जिससे भगवान विष्णु की पूजा और प्रार्थना करके अश्वमेध को पूरा होने नहीं दिया।

आज भी त्रिजुगी नारायण जी के मन्दिर में सुखद वैवाहिक जीवन की कामना के लेकर जोड़े आते हैं और यहाँ विवाह करते हैं। यहाँ तीन कुण्ड है –

1. ब्रह्म कुण्ड : ब्रह्मा जी ने इस कुण्ड में स्नान किया था।
2. विष्णु कुण्ड : इस कुण्ड में भगवान विष्णु जी ने स्नान किया था।
3. रूद्र कुण्ड : इस कुण्ड में सभी देवी–देवताओं ने स्नान किया था।

मान्यता है कि रूद्रकुण्ड में स्नान करने वाले भक्तों की सुख–समृद्धि तथा सन्तान की मनोकामना पूर्ण होती हैं। कहा भी जाता है कि इस कुण्ड का जल ग्रहण करने से कैंसर जैसे असाध्य रोगों से भी मुक्ति मिलती है।

इसके अतिरिक्त रूद्रप्रयाग जनपद के गुप्तकाशी में काशी विश्वनाथ जी का मंदिर विराजमान है। गुप्तकाशी से 8 किलोमीटर की दूरी पर माँ काली का मंदिर है। जो कालीमठ मंदिर के नाम से जाना जाता है। कालीमठ से 4 किमी0 की दूरी पर रूप महादेव का मन्दिर है। गौरी कुण्ड में माँ गौरी का मन्दिर है। केदारनाथ में बाबा भोलेनाथ का मंदिर है। गुप्तकाशी से 6 किलोमीटर की दूरी पर आनन्दनगर (अन्द्रबाड़ी) में दिल्लेश्वर महादेव का मन्दिर है। यहाँ से 3 किलोमीटर की चढ़ाई पर माँ ज्वालामुखी का मन्दिर है। आनन्द नगर से 500 मीटर की दूरी माँ कालिंगा का मन्दिर है। 500 मीटर नीचे की दूरी पर माँ चण्डिका का मन्दिर है। इसी स्थान के आसपास के गाँवों के पुरोहित बाबा केदारनाथ की नित्य पूजा–अर्चना करते हैं।

रूद्रप्रयाग की दिव्य केदारघाटी के अन्द्रबाड़ी गांव में जन्म लेकर मैं स्वयं को धन्य मानता हूँ। बाबा केदारनाथ जी के धाम में आने से भक्तों के कष्ट दूर होते हैं, मन की शान्ति मिलती है, पुण्य लाभ होता है, पाप दूर होते हैं और मनोकामनाऐं पूर्ण होती हैं। अपने पूरे जीवन काल में एक बार अवश्य यहाँ दर्शन करने आयें। इस दिव्य धाम के दर्शन मात्र से सम्पूर्ण जीवन धन्य हो जायेगा।



केदारनाथ धाम, उत्तराखण्ड

वन्दन



यशपाल सिंह 'यशी'
पर्यवेक्षक (से0नि0)

चरण वन्दन मात–पिता को, जिन्होनें हमें जन्म दिया,
पूजा वन्दन प्रकृति को, जिसने अन्न दिया हमें
सूर्य चन्द्र की चंचल किरणें, जिसने जीवन पाल दिया,
मेह मेघ की बूँदों ने धरती पर अन्न का भण्डार दिया।
सूक्ष्म रश्मियाँ सूर्य की जिसने जीवन में प्रकाश किया,
चन्द्र की अठखेलियों ने ही तो शीतल आकाश किया।
वृक्षों की बात अनोखी धरा का श्रृंगार किया,
प्रकृति की अनोखी संरचना का किसने निर्माण किया।।

दिन–रात का खेल रचकर जीवों को जीवन दान दिया,
पृथ्वी पर तरह–तरह के जीव जन्तुओं का विस्तार किया।
रूप रंग में सभी निराले, बहु विधि का आकार दिया,
जल नभ और आकाश में सभी को स्थान दिया।
अणु रूप से विशालकाय तक प्राणियों को अवतार दिया,
भिन्न–भिन्न रूप और रंग से सबका श्रृंगार किया।
ब्रह्माण्ड की अनोखी रचना का किसने अविष्कार किया,
कौन है वो शक्ति जिसने हर रंग रूप को आकार दिया।

नर–नारी का स्वरूप देकर सृष्टि का अधिकार दिया,
जन्म मृत्यु का चक्र चलाकर मोह माया में बाँध दिया।
निराकार की तलाश में सबने जीवन गुजार दिया,
आओ! पराशक्ति का चिन्तन करें जिसने सबका निर्माण किया।।



नादाधीनम् जगत सर्वम्



विक्रान्त कुमार
सहा0 लेखाधिकारी

कहते है कि सृष्टि का आरम्भ नाद से हुआ था, नाद अर्थात स्वर, संगीत, अंतर्मन की ध्वनि। नाद की केवल शब्दों सें व्याख्या करना असंभव है परन्तु समझने के उद्देश्य हेतु नाद को दो भागों में बांटा गया है–

1. अनाहत नाद
2. आहत नाद

अनाहत नाद अर्थात जो ध्वनि बिना किसी को आहत/चोट पहुँचाए उत्पन्न हो। यह केवल अनुभव की जा सकती है एवं स्वतः ही उत्पन्न होती है। यह नाद अंतर्मन की चेतना के जागृत होने का प्रतीक माना जाता है एवं योग तथा प्रणायाम के माध्यम से इसकी अनुभूति की जा सकती है। आहत नाद अर्थात जो ध्वनि किसी को आहत करके, चोट पहुँचाकर उत्पन्न की जाए। जैसे वाद्य यंत्रों से निकलने वाले स्वर/नाद आदि।तो क्या वास्तव में सृष्टि कि उत्पत्ति नाद से आरम्भ हुई, क्या वास्तव में ऐसी कोई घटना घटी थी क्या सृष्टि के संचालन में नाद कोई भूमिका रखता है। वर्तमान में हम सभी वैज्ञानिक सिद्धांतों के अनुसार ही तथ्यों पर विचार करते है तथा स्वयं का विवेक भी वैज्ञानिकता के आधार पर ही प्रयोग में लाते है।



"नादाधीनम् जगत सर्वम्" अर्थात सर्वत्र जगत, ये सृष्टि, ब्रह्माण्ड सभी नाद से उत्पन्न हुए हैं एवं नाद के ही अधीन है। इसका वर्णन हमारे वेदों एवं पुराणों में मिलता है जो मूल रूप से कई शताब्दियों पूर्व लिखे गए थे एवं उन्हें लिखे जाने से पूर्व भी वेदों का मौखिक वर्णन हजारों वर्षों से होता रहा था। इसका तात्पर्य यह भी है कि इस चर–अचर जगत की प्रत्येक वस्तु नाद से ही कार्य करती है। हमारे हदय से लेकर वृक्ष के बीज के अंकुरण तक सभी नाद के अधीन गतिमान है। अतः नाद वह ऊर्जा है जो इस सृष्टि के गतिशील होने का मूल कारण है।

वर्ष 1920 में जार्ज लेमितैरे ने कहा कि सृष्टि का आरम्भ एक महाविस्फोट से हुआ। इस सिद्धांत को बिग बैंग थ्योरी कहा गया। वर्तमान में अन्तरिक्ष विज्ञान में जितनी भी खोजें हो रही हैं, उसका मूल आधार यही सिद्धांत रहता है। इस सिद्धांत में यह भी कहा गया कि सृष्टि/अन्तरिक्ष लगातार प्रसार कर रहा है अर्थात फैल रहा है। वर्तमान में वैज्ञानिकों द्वारा अनेक खोज के उपरान्त यह सिद्ध हो गया है कि वास्तव में अन्तरिक्ष लगातार बढ़ रहा है। इस सिद्धांत के अनुसार भी सृष्टि का आरम्भ एक विस्फोट अर्थात नाद से हुआ। वास्तव में नाद प्रतिक्षण घटित होता है इस सृष्टि के कण–कण में नाद घटित होता है। प्रकृति में प्रतिक्षण घटित होने वाले क्रियाकलाप नाद के अधीन ही क्रिया करते है। नदी का कल–कल स्वर क्यों हमें सम्मोहित करता है, क्यों प्रकृति की स्वर ध्वनि हमें अपनी तरफ आकर्षित करती है, क्योंकि हम सभी नाद से बंधे है और उसके अधीन है।

अतः जो ज्ञान आज हमें वैज्ञानिक सिद्धांतों एवं अनुसंधान से प्राप्त हो रहा है वही ज्ञान हमारे पूर्वज ऋषि मुनि मौखिक एवं लिखित रूप में जनसामान्य को पूर्व में ही दे चुके है। आवश्यकता है तो बस उसका अवलोकन करने एवं उस पर विश्वास कर अगली पीढ़ी को समझाने की।

हिन्दी साहित्य की यात्रा



शिवम् सिंह
प्रभागीय लेखाधिकारी ग्रेड-II
प्रांतीय खण्ड, लोक निर्माण विभाग,
डीडीहाट, पिथौरागढ

शायद एक दूसरे को सुनना–समझना, कहना–बताना और जानना ही उद्देश्य रहा होगा कि इस पृथ्वी पर रह रही या रह चुकी समस्त प्रजातियों ने आपस में संदेशों के आदान–प्रदान के लिए कोई न कोई तरीका अवश्य विकसित किया है। सर्वश्रेष्ठ प्रजाति होने के नाते मनुष्य के संचार के लिए इन तकनीकों में से सर्वश्रेष्ठ रूप विकसित किया जिसे हम आज 'भाषा' के नाम से जानते हैं। शुरूआत चित्रात्मक व सांकेतिक रूप में हुई, जो शनैः मौखिक और लिखित रूप में विकसित होती चली गई। विकास व सुधार की यह प्रक्रिया आज भी जारी है और आने वाले समय में भी अनवरत जारी रहेगी।

भाषा की छोटी बहन है 'बोली'। आम जनमानस के बीच बिना किसी आवरण व व्याकरण के अपने मूल प्राकृतिक रूप में बोल–चाल को सामान्यतः बोली कहा जाता है। जिस प्रकार खेत में उगने वाले अनाज को सीधे ग्रहण नहीं किया जाता, उसे पहले धोया, पछोरा और पकाया जाता है ठीक उसी प्रकार 'बोली' जब लेखन हेतु प्रयोग की जाती है तो उसे व्याकरण के नियमों में ढलना होता है। उसका मानकीकरण किया जाता है। तब जाकर वह साहित्यिक रचनाओं की पात्र बनती है। समझने के लिए यह कहा जा सकता है कि जब किसी 'बोली' विशेष में साहित्यिक रचनाएँ होने लगती हैं तो वह 'भाषा' हो जाती है। उसे व्याकरण के नियमों में बाँधकर शुद्ध एवं परिष्कृत रूप में साहित्य में स्थापित किया जाता है। यथा–सोलहवीं शताब्दी में जब अवधी बोली में गोस्वामी तुलसीदास द्वारा श्रीरामचरितमानस की रचना की गई तो अवधी भाषा के रूप में स्थापित हो गई। कालांतर में साहित्यिक रचनाओं के अभाव ने अवधी को पुनः बोली के रूप में ला खड़ा किया है।

'बोली' जैसे ही साहित्यिक होकर 'भाषा' का कलेवर ओढ़ती है, वह धीरे–धीरे आम जनमानस से दूर होती चली जाती है। यह कार्य–कारण सम्बंध जैसा है जिसमें किसी 'बोली' का साहित्यिक सृजन हेतु मानकीकरण होना और उसका आम जनमानस से टूटना लगभग साथ–साथ चलता है। 'बोली' परिष्कृत हो 'भाषा' बनती है तो उसके मूल रूप 'बोली' को अशुद्ध का दर्जा दे दिया जाता है। यह कुछ–कुछ वैसे ही है जैसे पढ–लिखकर बच्चे अपनी जननी को अनपढ़ बता दिया करते हैं। भाषा की निरन्तर यात्रा में एक के बाद एक नई 'बोली' देखने को मिलती है। यह एक प्रकार का चक्र है, जिसकी अवधि निर्धारित नहीं है, परंतु यह अनवरत् चलती रहती है। भाषा के विकास में यह प्रक्रिया विभिन्न भाषाओं की जननी रही है।

वैदिककालीन देवभाषा संस्कृत के शुद्ध व परिष्कृत स्वरूप से मुक्त होकर सरलीकरण की अनिवार्य प्रक्रिया के चलते छह सौ ईसापूर्व के आस–पास तक पाली और प्राकृत बोलियों का विकास हो चुका था। आमजनमानस से जुड़नेऔर आम लोगों तक अपनी बात पहुँचाने के लिए महात्मा बुद्ध ने सभ्रान्त संस्कृत भाषा को तजकर आम लोगों की भाषा पाली–प्राकृत को उपदेश के लिए चुना। बौद्ध धर्म के लोकप्रिय व स्वीकार्य होने का यह एक महत्त्वपूर्ण कारण था। ईसा पूर्व के समय त्रिपिटक 'विनयपिटक' सुत्तपिटक' और 'अभिधम्मपिटक' में महात्मा बुद्ध के उपदेशों का संकलन पाली और प्राकृत भाषा में किया गया। ऐसे में एक बार फिर पाली और प्राकृत के भाषाई परिष्करण और मानकीकरण की प्रक्रिया शुरू हुई। जिसके फलस्वरूप सातवीं–आठवीं शताब्दी में अपभ्रंश के रूप में अवहट्ट का विकास हुआ। तत्कालीन समय में इस्लाम के उदय के फलस्वरूप धार्मिक आंदोलनों को बल मिला। जिसके क्रम में भारत में सिद्ध और नाथ सम्प्रदायों द्वारा धार्मिक और सामाजिक प्रचार–प्रसार के लिए साहित्य का सृजन हुआ।

इतिहास के बनने में भूगोल और राजनीति का सबसे बडा योगदान होता है। ग्यारहवीं सदी में दिल्ली सल्तनत में अरबी और फारसी दरबार की मुख्य भाषाएँ रहीं। यह आक्रमणों और युद्ध का काल था। अवहट्ट अब पुरानी हिन्दी के रूप में विकसित हो चुकी थी, जिसमें इस दौर में रासो साहित्य लिखा गया। रासो साहित्य में दरबारी कवियों द्वारा रचित पृथ्वीराजरासो, बीसलदेवरासो व आल्हा–ऊदल प्रमुख रचनाएँ हैं। इन रचनाओं में वीरता और शौर्य का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन है।

इस दौर में रासो साहित्य के साथ–साथ लौकिक साहित्य भी खूब लिखा गया। जिसमें तबला और सितार के आविष्कारक, कव्वाली और गजल के जनक अमीर खुसरो का जिक्र किया जाना आवश्यक है। हिन्दी भाषा में प्रथमतया इन्हीं की रचनाओं में प्रयोगधर्मिता जैसे मुकरियाँ, पहेली, दोहे आदि देखने को मिलते हैं। इससे अधिक आश्चर्य का विषय यह है कि आज से सात सौ वर्ष पूर्व चौदहवीं शताब्दी में अमीर खुसरों की रचनाएँ वर्तमान में खड़ी बोली हिन्दी में मेल खाती हैं। आपने इनकी वो पहेली तो सुनी होगी–

"एक थाल मोती से भरा, जिसके सिर पर औंधा धरा,
जैसे–जैसे थाल फिरे मोती उसके एक न गिरे"

क्या यह आज के खडी बोली हिन्दी जैसी नहीं लगती है? एक और उदाहरण देखिए–

"खुसरो दरिया प्रेम का, उल्टी वा की धार।
जे उतरा सो डूब गया, जो डूबा सो पार।।"

हिन्दी साहित्य में अमीर खुसरो के बाद खडी बोली हिन्दी आश्चर्यजनक रूप से सीधे छह सौ साल बाद बीसवीं सदी में देखने को मिलती है। अमीर खुसरो के बाद मुगलकालीन इतिहास आरम्भ होता है जिसे भारत का मध्यकाल कहा गया है। इस दौर में दक्षिण से शुरू हुआ भक्ति आंदोलन धीरे–धीरे पूरे भारतवर्ष में फैल चुका था। भक्ति आंदोलन की ही देन थी साहित्य दरबार से निकलकर समाज के बीच में पहुँचता है। यहाँ कविता का विषय राजा या शासक नहीं वरन आम जन मानस है, उनकी कहानियाँहैं। एक तरफ सूरदास ब्रज भाषा में बाल श्रृंगार रस में डुबे हए हैं –"मैया कबहुं बढेगी चोटी,मास दिवस मोही दूध पियत्त भय, यह अबहुं है छोटी, मैया कबहुं बढेगी चोटी।"

तो दूसरी और गोस्वामी तुलसीदास ने अवधी में श्रीरामचरितमानस की रचना कर सैकडों सहस्त्राब्दियों के लिए एक पावन ग्रंथ रच दिया। यह महज एक रचना नहीं बल्कि सनातन संस्कृति का उद्घोष है। आज हिंदू घरों में श्री रामचरितमानस को आदरपूर्वक लाल कपड़े में लपेट कर रखा जाता है। श्रुति परम्परा के देश में बहुतेरे ऐसे मिल जाऐंगे जिन्हें श्रीरामचरितमानस अक्षरशः कंठस्थ है। सम्भवतः यह विश्व में सबसे ज्यादा बार पढ़ी जाने वाली रचना है। इसी समय में बनारस में अनपढ कबीरदास रूढ़िवादी सामाजिक ताने–बाने को अपनी अनुभव की कसौटी पर कस रहे थे–

"कांकर–पाथर जोरि के मस्जिद लई चुनाय, ता उपर मुल्ला बांग दे, बहरा भया खुदाय।"
"मसि कागद छुओ नहीं, कलम गहों नहीं हाथ"

कबीरदास की भाषा में इतना सामर्थ्य था कि आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उन्हें भाषा का डिक्टेटर तक कहा है। कबीरदास ने मान्यताओं, रूढ़ियों को अपने तर्क से कटघरे में ला खड़ा किया। जिनसे समाज आज भी संघर्षरत है। उस समय एक मान्यता थी कि काशी में मृत्यु होने से स्वर्ग और मगहर नामक स्थान पर में मरने से नरक मिलता है। पूरा जीवन काशी में बिताने वाले कबीरदास अपने जीवन के अंतिम दौर में मगहर को चले जाते हैं। वे कहते हैं कि अगर काशी में मरकर ही स्वर्ग जाना है तो फिर जीवन भर राम का नाम लेने से क्या फायदा?

"जो काशी तन तजै कबीरा,
तौ रामहिं कौन निहोरा रे।"

सत्रहवीं सदी के उत्तरार्ध में मुगल साम्राज्य कमजोर होता है और उदय होता है छोटे–छोटे सामंतों का। जो छोटे–छोटे क्षेत्रों पर अपना अधिकार जमाकर विलासिता का जीवन जी रहे थे। इस दौर में एक बार फिर से साहित्य दरबार में रहकर सामंतों के गुणगान में लिखा जा रहा है। रीतिकाल में रासो साहित्य से इतर युद्ध के काल्पनिक वर्णन मिलते हैं। सामंत को प्रसन्न कर पुरस्कार प्राप्ति की लालसा में अलंकारिक रचना की जा रही है, जबकि वास्तव में युद्ध हो नहीं रहे। दरबार में बैठकर शांतिकाल में लिखे जाने के कारण इस दौर में रस, छंद, लक्षणा–व्यंजना आदि का विकास हुआ। चमत्कारिक व अलंकारिक भाषा में बिहारी जैसे गागर में सागर भरने वाले कवियों द्वारा कविता की रचना की गई। यहाँ कविता लिखने के लिये बनाई गई। यथा पद्माकर की यह कविता देखिए–

गुलगुली गिल में गलीचा है गुनीजन है, चांदनी है चिक है चिरागन की माला है,
कह पद्माकर त्यों गजक गिजा है सजी, सेज है, सुराही है, सुरा है और प्याला है।

अंग्रेजों के शासनकाल में हिन्दी साहित्य के विषयों का पुनः उत्थान होता है और वह माध्यम बनती है लोगों को जागृत करने का। अपनी मातृभूमि की आजादी के लिए सहर्ष न्योछावर हो जाने हेतु जनमानस को प्रेरित करने का। भारतेंदु हरीशचन्द्र ने ब्रज भाषा में 'अंधेर नगरी' और 'भारत दुर्दशा' जैसे नाटक लिखे। तो राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा–

जिएँ तो सदा इसी के लिए, यही अभिमान रहे यह हर्ष।
निछावर कर दें हम सर्वस्व, हमारा प्यारा भारतवर्ष।।

जयशंकर प्रसाद ने महाकाव्य कामायनी की रचना कर हिन्दी भाषा की अपार सम्भावनाओं को नई ऊँचाई प्रदान की। मुंशी प्रेमचंद ने 'गोदान' व 'गबन' जैसे जीवंत उपन्यास और अपनी कालजयी कहानियों के माध्यम से भारत में यथार्थ को सबके समक्ष ला खड़ा किया। निराला जी ने 'राम की शक्ति पूजा' में जन–जन में राम का आह्वान कर, अपने हितों के लिए स्वयं लड़ने का भाव संचरित कर आजादी की मशाल जला दी।

फिर दिखा, महादेवी वर्मा का छायावाद, बाबा नागार्जुन का प्रगतिवाद और अज्ञेय का प्रयोगवाद। तत्पश्चात् अकविता आंदोलन, अकहानी और वर्तमान में 'नई वाली हिन्दी' ने हिन्दी भाषा की और अधिक व्यापक व समृद्ध किया है। समय के साथ नवीन आविष्कार होंगे, नए प्रतिमान आएँगे और साथ आएँगे नित–नए शब्द, नवीन मानक। भाषा का विकास निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। जो इस धरा पर मानव जाति के होने तक चलती रहेगी। उसके बाद भी यदि कभी हमारे चिह्न खोजे जाएँगे तो 'भाषा' ही इस खोज के लिए भी आधारभूत मार्ग दिखाएगी।

मंज़िल



अरविंद सिंह रावत
लेखाकार

खाली राह पर यूँ ही चलता रहा,
ना मंजिल का पता, फिर भी मंजिल खोजता रहा,
राह के जिस मोड़ पर जो मिला,
साथ उसके चल दिया,
ना जाने कितने मोड़ आए, आकर चल दिए,
पर हम यूँ ही बेसुध होकर चलते गए,
ना जाने कितने मोड़ों पर कितने साथ आए,
कुछ दूर साथ चलकर, साथ छोड़कर चल दिए,
जब पहुँच गए राह के ऐसे मोड़ पर,
जहाँ सब छोड़ गए अकेले इस राह पर,
तब जाना जिंदगी का फलसफा,
अगर राह में कोई मंजिल साथ होती,
कोई–हो ना हो, मेरी मंजिल मेरे साथ होती।।

नीम का पेड़



पूनम शर्मा
हिन्दी अधिकारी

ये नीम का पेड़ मेरे आँगन का,
अक्सर गुफ्तगू करता रहता मुझसे।
अकस्मात, अनायास ही,
नासमझी के लाखों प्रश्न पूछता मुझसे।
मैं भी तो व्यस्त सी हो गई
अपनी जिंदगी में इतना,
कि फुरसत के पल मिल नहीं पाते
बतियाने को इससे चाहूँ जितना।।

प्रश्न कुछ उसके कौंध जाते
मानस पटल पर मेरे।
कुछ जाने कुछ अनजाने से,
कुछ मद्धम कुछ तीव्र से
प्रश्न नीम के बहुतेरे।

पूछा उसने बतलाओ सच
मुझे गर तुम बतला सको तो बतलाना,
बदल सकोगे मेरी शीतल मन्द बयार से
अपने कमरे में लगे ए0सी0 की सर्द हवा को
गर तुम बदल सको तो बतलाना।

करता हूँ वादा तुमसे कुछ और पूछूँगा नहीं,
यदि मेरी पत्तियों–सी कोमलता,
मिलती हो तुमको अपने नरम बिस्तरों में कहीं,
गर मिलती हो तो बतलाना।

चाहे कर लो कितने भी तुम,
आधुनिकता से भरी नई–नई कंपनियों के पेस्ट,
पर दावा है मेरा नहीं मिलेगा
उनमें मेरी दातुन–सा कोई टेस्ट।

कभी नन्हें शिशु का झूला
अपने घर में तुम डाल पाओगे
यदि हो छाया मेरी, ठण्डक मेरी,
बारिश से भीगी पत्तियों के मेरी
फुहार कहाँ से लाओगे।

अनंत खुशबुओं के साबुनों से
नहा लो तुम, बात वह पाओगे नहीं,
जहाँ उबालकर कुछ पत्तियाँ मेरी
पानी में नहाए तो, रोग सारे भगाओगे वहीं।

डिटोल, बिटाडिन, बोरोलीन
लगा लो भला कितना भी अपनी चोट पर तुम
मानो कहना मेरा, जरा सी छाल को
लगाने से ही शांति पाओगे तुम।

गुड नाईट, ओडोमॉस या फिर
आजमा लो मच्छर भगाने के लाख नुस्खे तुम,
पर बतलाता हूँ तुम्हें कि कुछ मेरी पत्तियों के,
धुँए में है मच्छरों को भगाने का दम।

चलो अब बतियाने को अपने
मैं विराम देता हूँ।
बूढ़ा हो रहा हूँ धीरे–धीरे,
अब मैं भी कुछ विश्राम लेता हूँ।

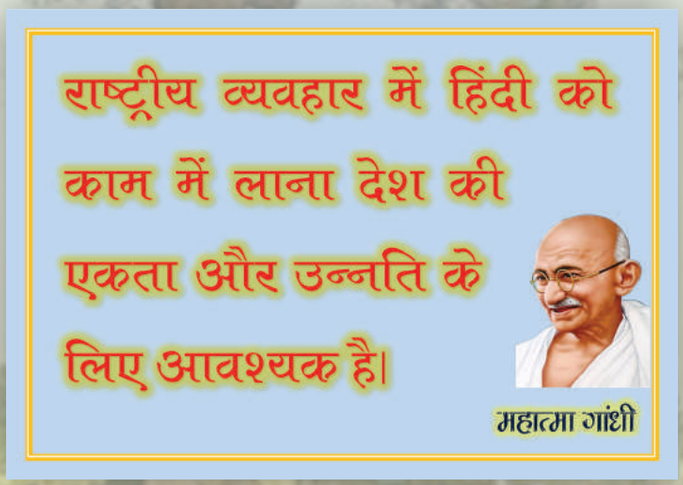
पर हाँ! जरा एक आखिरी बात तो
मेरी तुम सुनते जाना,
और अपने व्यस्ततम जीवन से
कुछ पल इस पर सोचने में भी बिताना।

यदि वृक्ष एक ही हूँ मैं,
और लाभ मेरे हैं अनगिनत,
तो बतलाओ सच मुझे दोस्त मेरे
क्यों है केवल एक बाल्टी पानी देने में कष्ट।

तुम्हारे बेहतरीन स्वास्थ्य और
निरोगी काया का रहस्य,
स्वयं में मैनें छुपा रखा है,
फिर भी समझ नहीं पा रहा हूँ
क्यों खुद को मेरे स्नेह से वंचित तुमने बना रखा है।

आवश्यकता या इच्छा बहुत अधिक मेरी नहीं है,
मिल जाएगा यदि कुछ जल जड़ों को मेरी रोज,
यकीन कर, ऐ दोस्त!
दीर्घायु तुम्हारे हो जाने में कोई देरी नहीं है।

जितना देता मैं तुमको हूँ
उसका हजारवाँ हिस्सा भी यदि दे दो तुम
देता हूँ वचन तुम्हें,
और रहूँगा वचनबद्ध सदैव,
रहोगे सदा तंदुरुस्त, स्वस्थ्य और निरोग तुम।।

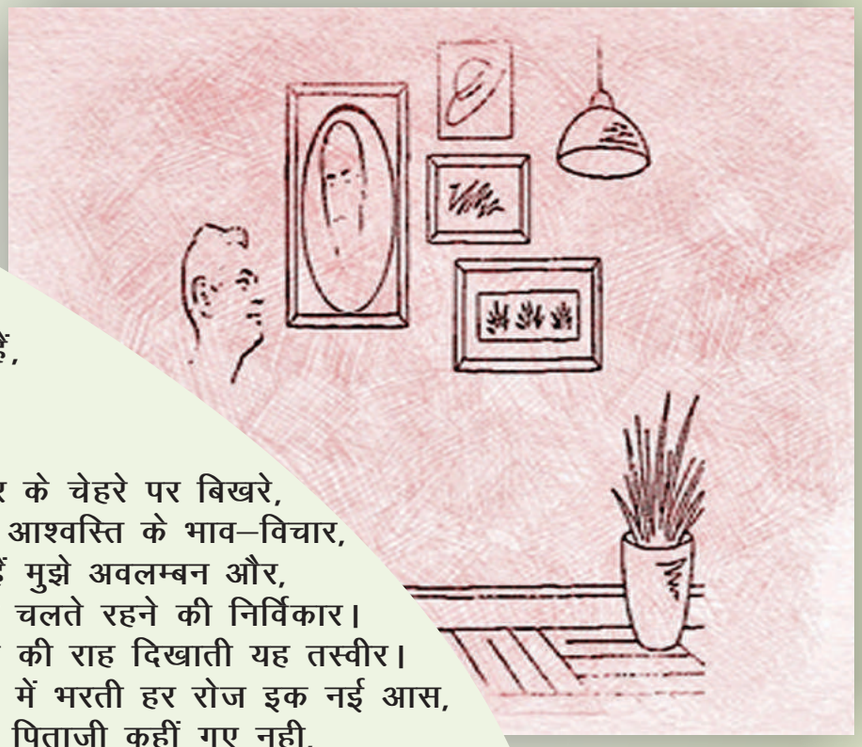


बोलती तस्वीर

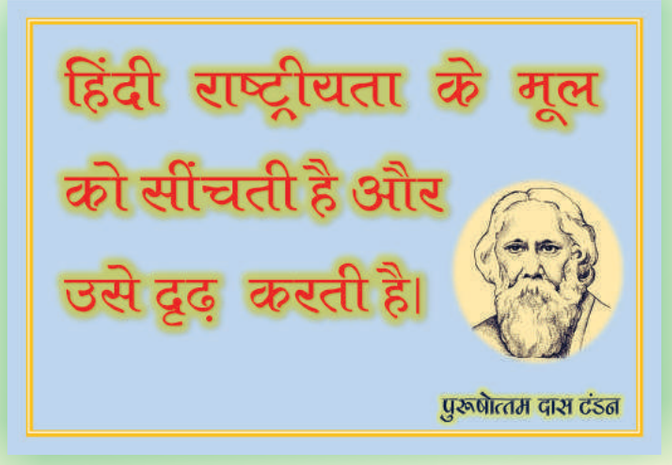


डॉ0 दिनेश शर्मा
सहायक लेखाधिकारी (तदर्थ)

घर के भीतर कदम रखते ही दिखती है,
एक तस्वीर सामने की दीवार पर।
देखती हैं अपलक मुझको,
उस तस्वीर से एक जोड़ी आँखें।
बेजान फ्रेम से झाँकती,
वह जानदार चमकदार आँखें,
मानो, पूछ रही हों,
दीनू! कैसा रहा आज का दिन ?
फिर मैं अपने अनुभवों को,
मन ही मन दोहराता हूँ,
किस्से खट्टे और मीठे पलों के,
उस तस्वीर को सुनाता हूँ।
सुनकर मेरी कथा–व्यथा,
उन होंठों पर भी शब्द उभरते हैं,
मानो, अभी बोल उठें हों,
फिकर नॉट, सब ठीक होगा।।



तस्वीर के चेहरे पर बिखरे,
गहरी आश्वस्ति के भाव–विचार,
देते हैं मुझे अवलम्बन और,
प्रेरणा चलते रहने की निर्विकार।
जीवन की राह दिखाती यह तस्वीर।
सांसों में भरती हर रोज इक नई आस,
मानो, पिताजी कहीं गए नही,
अब भी यहीं हैं, मेरे आसपास।
हमेशा, यहीं.... मेरे आसपास....



दानवीर कर्ण का रोचक प्रसंग



प्रशांत जोशी
वरिष्ठ लेखाकार

एक समय भगवान श्रीकृष्ण संध्या के समय अर्जुन के साथ भ्रमण करते हुए राजा कर्ण की भरपूर प्रशंसा किये जा रहे थे। इससे अर्जुन कर्ण की प्रशंसा सुन व्यथित होते हुए भगवान श्रीकृष्ण से कहते हैं कि कर्ण में कौन सी ऐसी विशेष बात हैं, जो मुझमें नहीं हैं। इस बात को सुनकर भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन की परीक्षा लेने के उद्देश्य से एक बाह्मण को अर्जुन के पास भेजा। जिसने अपनी मरती पत्नी को वचन दिया था कि व उसका क्रिया–कर्म चन्दन की लकड़ी से करेगा।

इस उद्देश्य से वह बाह्मण चन्दन की लकड़ी की अभिलाषा लिए हुए युधिष्ठिर के राज्य में प्रवेश कर अपनी पत्नी के क्रिया–कर्म हेतु चन्दन की लकड़ी माँगता हैं। युधिष्ठिर चंदन की लकड़ी के लिए ब्राह्मण के साथ अर्जुन को भण्डार गृह में भेजते हैं, लेकिन अर्जुन को भगवान श्रीकृष्ण की माया से भण्डारगृह में चंदन की लकड़ीनहीं मिल पाती हैं। इस कारण ब्राह्मण को महाराज युधिष्ठिर के राज्य से खाली हाथ निराश होकर वापस जाना पडता है।

वहाँ से निराश होकर वह ब्राह्मण चन्दन की लकड़ी की अभिलाषा लिए राजा कर्ण के महल में जाकर अपनी पत्नी के क्रिया–कर्म हेतु चन्दन की लकड़ी माँगता है। उसके साथ राजा कर्ण स्वंय चंदन की लकड़ी के लिए भंडारगृह जाते हैं, लेकिन भगवान श्रीकृष्ण की माया से कर्ण के भण्डारगृह में भी चंदन की लकड़ी नहीं मिल पाती हैं। इस पर वह बाह्मण निराश होकर कहता हैं –"दानवीर कर्ण के महल से भी मुझे निराशा मिलेगी"।

उत्तर में कर्ण कहता है–"आपको मेरे महल से निराश होकर नहीं जाना पड़ेगा।" ऐसा कहकर वह अपने महल से चार चंदन के खंभे उखाड़कर ब्राह्मण को दे देता है।



भगवान श्रीकृष्ण के साथ अर्जुन अगले दिन भ्रमण करते हुए देखते हैं कि वह ब्राह्मण अपनी पत्नी की चिता के पास बैठे हुए हरि भजन करने के साथ–साथ कर्ण की प्रशंसा भी किये जा रहा था। इस पर अर्जुन ब्राह्मण से पूछते हैं कि आपको चन्दन की लकड़ी कहाँ से प्राप्त हुई।

इस पर वह ब्राह्मण पूरा वृत्तान्त अर्जुन को विस्तार से बताता हैं। तब भगवान श्रीकृष्ण मन्द–मन्द मुस्कान के साथ अर्जुन से कहते हैं– "कर्ण में यह एक ऐसा गुण है कि वह अपने राज्य में आने वाले किसी भी याचक को खाली हाथ नहीं जाने देता। कर्ण में यही वो खास बात है जो अन्य किसी में नहीं है।"

ग्लोबल वार्मिंग का बढ़ता खतरा



विनोद कुमार शर्मा
वरि0 लेखाधिकारी (सेवानिवृत्त)

पृथ्वी के तापमान में हो रही लगातार वृद्धि एवं विभिन्न प्रकार की मानवीय गतिविधियों के कारण होने वाले जलवायु परिवर्तन के चलते मानव जीवन के लिए खतरा बढ़ता जा रहा है। यह समस्या एक गंभीर रूप ले चुकी है तथा प्रत्येक वर्ष इसकी गंभीरता में क्रमिक वृद्धि हो रही है। हमारे पहाड़ जो कभी अपने सुहावने मौसम के लिए जाने जाते थे, आज वहाँ भी प्रचंड गर्मी ने अपना प्रभाव दिखाया है। ग्लोबल वार्मिंग का ही असर है कि हमारे हिम ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं। बड़ी–बड़ी नदियों में पानी का अभाव होने के कारण उनका आकार लगातार कम होता जा रहा है। रेगिस्तान पसरते जा रहे हैं। भीषण गर्मी ने मानव के साथ ही हमारे वनस्पति एवं जन्तु जगत को भी बुरी तरह प्रभावित किया है। ग्लोबल वार्मिंग से होने वाले जलवायु परिवर्तन से बारिश के तरीकों में भी बहुत बदलाव आया है। अर्थात कुछ क्षेत्रों में अत्यधिक वर्षा तथा कुछ क्षेत्रों में सूखे की स्थिति समय–समय पर देखने को मिलती है। ऐसा माना जाता है कि ग्लोबल वार्मिंग के कारण होने वाले परिवर्तन के लिए सबसे अधिक ग्रीन हाउस गैसें जिम्मेदार हैं। यह समस्या हमारे पावर हाउसों, यातायात–गाड़ियों, आवासीय क्षेत्रों से तो बढ़ ही रही है, साथ ही आजकल कचरे को जलाने से उत्पन्न हाने वाली गैसों के उत्सर्जन से भी लगातार बढ़ती जा रही हैं। हमारे नगर निकाय भी कचरा प्रबंधन के लिए समय–समय पर अनेक योजनाएँ बनाते हैं। घरों के अंदर इलैक्ट्रानिक सामानों जैसे फ्रिज, एयर कंड़ीशनर और दूसरी कूलिंग मशीनों का प्रयोग लगातार बढ़ता जा रहा है।

औद्योगिक इकाइयों की चिमनियों से निकलने वाला धुआँ भी अत्यधिक हानिकारक है तथा इसके साथ ही पर्यावरण मानकों का सख्ती से पालन नहीं होने के कारण गाड़ियों से निकलने वाले धुएँ ने इस समस्या की गंभीरता को और बढ़ा दिया है। हम देखते हैं कि प्रत्येक वर्ष नई गाडियों की संख्या सड़क पर बढ़ती जा रही है तथा इनकी संख्या पर नियंत्रण करने तथा लोगों को इनके स्थान पर सार्वजनिक परिवहन के साधनों का अधिक से अधिक उपयोग करने के लिए प्रेरित करने हेतु अपेक्षित प्रयासों का अभाव है।

ग्लोबल वार्मिंग के कारण पृथ्वी के लगातार गर्म होने से पूरे विश्व को खतरा उत्पन्न हुआ है। विशेषज्ञों द्वारा समय–समय पर ऐसी आशंकाएँ व्यक्त की जाती रही हैं कि आने वाले दिनों में सूखा बढ़ेगा, बाढ़ की घटनाएँ बढ़ेगी तथा मौसम का मिजाज बुरी तरह बिगड़ेगा या बदला हुआ दिखाई देगा। यह बहुत चिंता का विषय है तथा इसके लिए गंभीर रूप से चिंतन करने की आवश्यकता होने के साथ ही साथ आम जनता को भी जागरूक करने की महती आवश्यकता है। हमें सोचना होगा कि क्या इसे रोकने या अंकुश लगाने का कोई उपाय किया जा सकता है या नहीं। आम जनता को हम अपने आस–पास के वातावरण को प्रदूषण से मुक्त रखने, वृक्षारोपण पर जोर देने तथा पर्यावरण को नुकसान न पहुँचाने के लिए जागरूक करके इस पृथ्वी को बचाने के लिए एक बड़ी भूमिका निभा सकते हैं। हमें उद्योगों से निकलने वाले कचरे को फिर से उपयोग करने लायक बनाने हेतु सार्थक प्रयास करने होगे तथा प्राथमिकता के आधार पर सख्ती के साथ पेड़ों की कटाई पर रोक लगाते हुए जंगलों के संरक्षण पर जोर देना होगा। हम देखते हैं कि मानवीय या विभिन्न कारणों से जंगलों में आग की घटनाएँ लगातार बढ़ती जा रही हैं। इससे हमारे पर्यावरण को गंभीर नुकसान पहुंचने के साथ ही साथ भूमंडल का उष्मीकरण भी बढ़ता है। हमें इस पर गंभीर रूप से चिंतन करते हुए इस पर रोक लगानी होगी।

ग्लोबल वार्मिंग अर्थात् वैश्विक तापमान का लगातार बढना पूरी दुनिया के लिए एक गंभीर समस्या है तथा इसके लिए आम जनता में जागरूकता फैलाने की नितांत आवश्यकता है। हम सभी को इसके लिए प्रयास करने होंगे तभी इसके बढ़ते खतरों का सामना किया जा सकता है।

कोरोना डायरीज – भाग २
डमरू बाजे बंदरु नाचे



शिवम् लिलहोरी 'बानगी'
लेखाकार

बात निकली ही है तो गोया दूर तलक जाएगी, भई ये किस्सागोई की आदत हमसे तो ना छूट पायेगी। तो हुजूर गौर फरमाये ....

डुगडुगी बजी जोर से, एलान हुआ शोर से। चुनाव की रैली में, हमारी शैली में, आपको आना है मान्यवर, लेकर वोट हथेली में। हमने सुना, तो अचभा हुआ। चीनियों की कारस्तानी से अभी उभरे तो नहीं थे कि अपनों ने ही कारस्तानियाँ शुरू कर दी। कल तक घर में बैठे रहने का उपदेश और आज रैली में चलने का सन्देश !! क्या बात है बाबू रमेश !! अब ये मत पूछियेगा बाबू रमेश कौन है? अच्छा चलिए इतना याराना हो ही गया है तो बताए देते हैं। हमारे इलाके की पार्टी के अध्यक्ष हैं। अब पार्टी ना पूछियेगा? ना ही पक्ष और ना ही विपक्ष। चार चमचों को लेकर अपनी ही कोई पार्टी बना के खड़े हैं। मंत्री से लेकर संतरी तक, सबको जेब में लिये चलते हैं। पहले किसी बड़ी कंपनी में थे।सो कंपनी के काम की खातिर सांठ–गाँठ किया करते थे। अब कंपनी छोड़ के वही ताल्लुकात भुनानेमें लगे हैं। जनसेवा की आड़ में खूब मेवा बटोर रहे हैं।काबिले गौर बात ये नहीं की वो क्या करते है? गौर फरमाने लायक बात ये है कि आजकल वे कहाँ रहते हैं? उनका जिक्र इसलिए आया, क्यूंकि कल तक जो हर मोड़, नुक्कड़ पर टेबल सजा के लोगों की मदद करने का वादा देते थे, आज खुद ही नदारद है। हर मौके को भुनाने में विशारद, पूरे कोरोना काल में एक झलक तक न दिखलाये, ताज्जुब होता है !!! खैर छोड़िए, खुद नजरबंद होंगे कोरोना के डर से, इसीलिए नहीं निकल रहे होंगे घर से, इन "आया राम, गया राम" से तो भगवान ही बचाये।

वैसे एक बात बतलाएँ, आपको क्या लगता है, ये चुनाव प्रचार की रैलियों में चारों तरफ अधिकतर मर्द ही क्यों काम करते नजर आते हैं? चाहे मंच हो या रैली, चाहे पुलिस या प्रेस चारों तरफ की व्यवस्था को सुचारुरूप से चलाने वाले। क्या कहा? मर्दों में प्रबंधन की कला होती है!!

अजी हाँ... हमारी बला से। मर्द होने के नाते बता रहे है... भाई साहब, घर अव्यवस्थित हो तो घर से बाहर व्यवस्था सँभालने में ही भलाई है। अंदर की एक और बात बतायें, ये चुनाव नहीं बल्कि व्यथित पतियों को थोड़ी देर की राहत दिलाने का प्रयास है। कोरोना डायरी के पिछले किस्से "पत्नी पुराण" मे आपको बताया था ना, बस वही। पतियों को कोरोना से डर नहीं लगता साहब, पत्नी से लगता है।

चुनाव के बहाने ही सही, कुछ देर घर से बाहर तो रहेंगे। चार–पाँच डंडे पड़ भी गए तो क्या होगा? बस इसी कारणवश नेताजी से लेकर कार्यकर्त्ता जी सब डटे है मैदान में, बंदोबस्त चाक–चौबंद। खैर हमे क्या, हम तो घर में बंद है और टेलिविजन के सामने बैठे रजामंद हैं। ये न्यूज वाले भी लगता है अपनी बीवियों के सताए हैं। तभी दिन भर अपने दफ्तर में बैठकर एक ही खबर अलग–अलग ढंग से बाँचते रहते हैं।मजाल है जो एक बार भी कोई घर जाने की जिद करे। दो तीन घंटा ओवरटाइम तो खुशी–खुशी दिल से कर देते हैं। वो भी बिना किसी माँग के, बशर्ते घर जाने को न कहो।

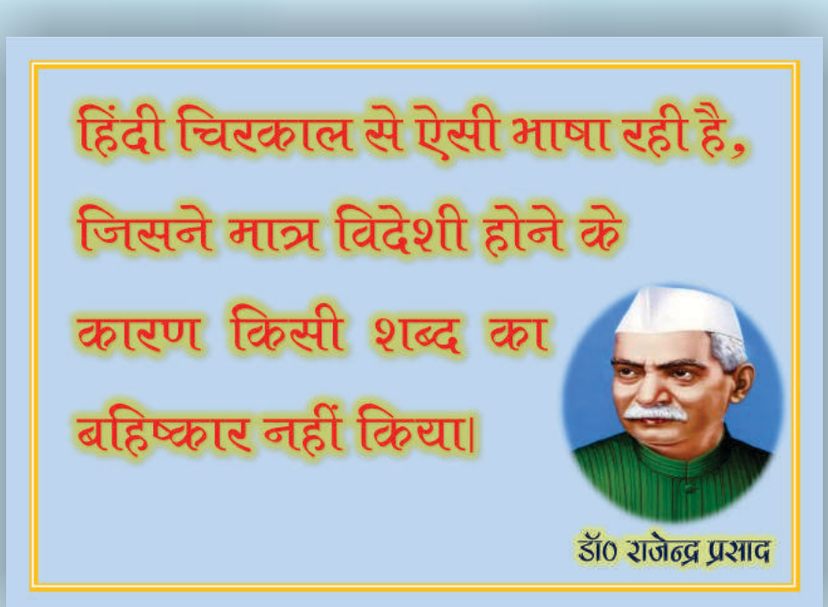
दिन भर की झिकझिक से थोड़ी देर बचने के वास्ते, हम निकल लिए खबरों के रास्ते। आसन जमाया और टीवी लगाया। बैठ गए बुध्दू बक्से के सामने रिमोट थाम के। रिमोट की दुखती नसों को दबाते जा रहे थे और एक जगह टिकने से कतराते जा रहे थे। हमे कोसते–कोसते रिमोट बेचारा भी बेहोश हो गया। हमें लगा ऐसे कैसे हो गया? प्राइम टाइम में रिमोट की इतनी मजाल, खींच ना दें इसकी खाल! हथेलियों पर मार–मार कर उसे होश में लाये और फिर रहमो–करम दिखाते हुए उँगलियों के पोरों से मालिश दिलवाये। हमारे और रिमोट के बीच मची, इस संगीन तनातनी से और हमारी तनाशाही से रिमोट को निजात दिलाई सामने से आती एक खबर ने। खबर भी दिलचस्प थी, तो हमारी आँखें टीवी पर और उंगलियां रिमोट पर टिक गई। रिमोट ने भी कराहते हुए राहत की साँस ली।

हुआ कुछ यूँ था कि हमारे शहर लखनऊ, जी हाँ...नवाबों के शहर लखनऊ में, फिर किसी टैक्सी वाले ने नवाबियत दिखाई और उसकी जमके हुई धुनाई। पूजा करके प्रसाद बाँटने की परंपरा तब से है हमारे शहर में जब इसे "लक्ष्मणपुरी" नाम से जानते थे या फिर और भी पहले से जब शहर के संस्थापक लक्ष्मण जी ने शूर्पणखा की नाक काटी थी। खैर, वो जमाना और था, ये जमाना और। सो परंपरा का निर्वाह पूरे जी जान से किया था, किसी कुमसुम कुमारी ने। वो भी सरे आम, बीच बजरिया, लाल बत्ती पर ट्रैफिक रुकवा कर, बात भी बनी और बात का बतंगड़ भी। न्यूज चली और चलते–चलते चली गई। सोचते–सोचते हमने दाद देने की मुद्रा बनाई ही थी की तभी बगल से तेज आवाज आई–"शाबाश! ये हुई न बात"

इस आवाज से हमारी दिल की धड़कने रुकते–रुकते फिर चल पड़ी थी। बगल में छुरी के साथ एक परात जो आ धरी थी। आ धमकी थी वो, जो कहने को तो धर्म से हमारी पत्नी और मिजाज से बिलकुल बेबाक स्त्री थी। जिन्हे बनानी चटनी थी। अरे....हमारी नहीं भई, आप लोग भी, कुछ भी सोच लेते हैं। धनिये की भई... धनिये की चटनी।

देखिये जरा, खबर चलते–चलते कहाँ तक चली गई थी। रसोई में इतनी चटपटी खबर सुन कर, धनिया काटने और टीवी देखने का काम इकट्ठा ही निबटाने की सोची उन्होंने।सो रसोई से निकल सोफे पर डेरा जमाया और रिमोट हमसे छीन कर, वापस न्यूज चैनल लगाया। उस लड़की की तारीफ करते–करते थक नहीं रही थी और टैक्सी वाले लड़के को कोस रही थी। कनखियों से बीच–बीच मे हमे भी देख रही थी... मानो उस टैक्सी वाले लड़के को प्रेरणा हमीं से मिली हो। खैर, हम बोलते भी तो क्या? चाहे दिन हो या रात, मर्द जात की क्या ही बिसात।

तो साहब... कुछ यूँ हमारा दिन बीता, रात आई,सोने से पहले हमने ली अंगड़ाई। जोर से जम्हाई के साथ "हरि ओउम्" का जयकारा लगाते हुए पसर गए। निंदासी अँखियन को पलकों से ढाँप, कुछ सोच विचार करते हुए नींद के आगोश में समा गए।



करिश्मा इंसान का



यशपाल सिंह 'यशी'
पर्यवेक्षक (से0नि0)

आकाश की तरगों से, प्रकृति के रंगों से,
नदियों के छोरों से, बादलों के शोरों से,
समुद्रों की लहरों से, सागर की गहराईयों से,
ऐ इंसां, सब कुछ तूने बना डाला।
जमीं आसमां को मिला डाला।।

न बची कोई दूरियां, न रही कुछ मजबूरियां,
जमीं को भी खोद डाला, आसमां में भी झंडा गाड़ा,
ऐ इंसा, सब कुछ तूने बना डाला।
जमीं आसमां को मिला डाला।।



पूरब नापा, पश्चिम भी नापा,
देख करिश्मा तेरा, धरामण्डल भी काँपा,
उत्तर भी दूर नहीं, दक्षिण भी दूर नहीं,
सब कुछ तो तूने, हासिल कर डाला।
ऐ इंसा, सब कुछ तूनें बना डाला।

जिसने तुझे बनाया,
तूने उसे भी बना डाला,
ऐ इंसा, सब कुछ तूनें बना डाला।

सब कुछ करके भी,
अभी भी तू उससे हारा है,
प्रकृति का रंग ही,
सर्वत्र कुछ ऐसा है,
तूने सब कुछ बदल डाला।
ऐ इंसा, सब कुछ तूनें बना डाला।।
फिर भी तू उससे हारा,
उसका तो खेल ही निराला।
फिर कैसे कह रहा है तू
तूने सब कुछ बना डाला।



काश.....



मोनिका सिंह
सहायक लेखाधिकारी

काश की ऐसा दौर वो आये हम इतने चेतन हो जायें,
ना महसूस हो पहाड़ सा बड़ा गम, और छोटी सी खुशी से पागल हो जायें हम।

काश की ऐसा दौर वो आये हम बचपन में फिर से लौट पायें,
और फिर उसी बेफिक्री के आलम में दिन महीने साल बितायें।

काश की ऐसा दौर वो आये कि हम थोड़े खुदगर्ज हो जायें,
खुद की खुशी को जाने पहले और उसको जीने लग जायें।

काश की ऐसा दौर वो आये ना हो किसी से उम्मीदें हमें ज्यादा
और खुद की उम्मीदों पर खरे उतर जायें।

काश कि ऐसा दौर वो आये कि
जाने से पहले हम जीना सीख जायें।।



बात डायरी की



शिवम् लिलहोरी 'बानगी'
लेखाकार

जब पूरे चाँद की रात हो और उफान पे हो दिल का दरिया
जब तन्हाई से उबरने का ना हो
कोई और जरिया
जब चाँदनी चुभे पलकों में
और खयाल किसी का कौंधे
दिमागी हलकों में
तब दराज के अँधेरे तंग गलियारों
से निकालना
और उनके तसव्वुर में खोये हुए
मुझे सँवारना ...

मुझे सजाना उनकी तारीफों से
कलम उठा हर हर्फ की
नक्काशी यूँ करना
जैसे चेहरे पे उनके कभी–कभी
हवा कर जाती थी
और बिखरी जुल्फों को सहेजते हुये
उँगलियाँ नुक्ते लगातीं थी ...

कोई नज्म या गज़ल कोई
उनपे नज़र कर देना
जैसे छुपके उनकी पलकें
करती थीं गुस्ताखियाँ
ऐसे हो उसमें रदीफ से पहलेके काफिया
मिसरे जो उछले तो याद में उनकी
हर शेर खुद–ब–खुद मुकर्रर हो जाये
जिन्हे सुन के बेसाख्ता लबों से बस
दाद निकलती जाये...

क्यूँ...
बातें उनकी करते हो तो करीब
मेरे रहते हो
साँसों की गर्म रौशनाई से कोरे
सफ्हों में दम भरते हो
सोचते– सोचते कलम जो दाँतों
के बीच में जाए तो
दामन मेरा अपने अश्कों से
सराबोर करते हो....

लेकिन ...
एक बात अच्छी नहीं
लगती तुम्हारी
खूबसूरत लफ्जों की करते
हुये कलमकारी
न जाने क्या सोच के एकदम
उचट जाते हो
अपनी ही करी हुई बुनाई
रगड़–रगड़ के उधेड़ देते हो....

एक बात बोलूं,...
जिस्म मेरा सजाते–सजाते
जख्म अपने क्यूँ कुरेद लेते हो
दरकिनार कर मेरी मिन्नतों को
क्यूँ नहीं, बंद मुझे कर देते हो
दर्द दे रहा है वो इतना जब,
क्यूँ नहीं, उसे छोड़ देते हो
जो हुआ खुदा की रजा मान कर
क्यूँ नहीं, उसे माफ कर देते हो

..... आगे फिर कभी
तुम्हारी डायरी



भीगा अहसास



शंशाक गुप्ता
लेखाकार

कितने है कोई पास मेरे,
आज बोलेगें अहसास मेरे,
सावन की बरसती बेला में,
भीगी अधरों की प्यास मेरे...
रहते है हर पल साथ मेरे,
धड़कन की जैसे आवाज मेरे,
मधुसूदन सी क्रान्ति जिसकी,
मै राधा और वह श्याम मेरे...
मन से निश्छल, दृढ़ निश्चित प्रतिपल,
कर्मपरायण स्वभाव से चंचल,
हदय में पल पल गुंजित है,
वाणी की मीठी साज मेरे....
तुम राग मेरे बैराग मेरे,
तुम ही धरा, आकाश मेरे,
बीते लम्हों की यादों के,
स्वर गूंजे मन मे आज मेरे...
मानोकाशी की पावन धरती पर,
गूँजे बम–बम भोले का नाद मेरे।।



हिन्दी पखवाड़ा–2021
(दिनाक 14 सितम्बर से 28 सितम्बर 2021)



उद्घाटन समारोह



मा0 गृह मंत्री के सन्देश का वाचन





मध्यवर्ती प्रतियोगिताओं का आयोजन



गृह पत्रिका हिमज्योति के ग्यारहवें अंक का विमोचन

हिन्दी प्रकोष्ठ की गतिविधियाँ



कानपुर, उत्तर प्रदेश में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में श्री नवीन त्रिपाठी, सहायक लेखाधिकारी द्वारा प्रतिभाग किया गया



दिनांक 30.09.2021 को आयोजित हिन्दी संगोष्ठी में प्रतिभाग करते अधिकारी/कर्मचारी

हिन्दी कार्यशाला





कार्यशालाओं में भाग लेते कार्मिक



कार्यशाला के दौरान विचार–विमर्श



व्याख्याता श्री महिमानन्द भट्ट का स्वागत करते हुए उप महालेखाकार



व्याख्याता श्रीमती मधुलिका श्रीवास्तव के साथ प्रतिभागी



व्याख्याता श्री महिमानन्द भट्ट के साथ प्रतिभागी

मनोरंजन क्लब की गतिविधियाँ





आवासीय परिसर, को में दिनांक 26.10.2021 को प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) एवं प्रधान महालेखाकार (ले0 एवं हक0) द्वारा 'ओपन एयर जिम' का उद्घाटन किया गया





लेखा मनोरंजन क्लब द्वारा आयोजित महिला खेल एवं मनोरंजन गतिविधियाँ



महिला प्रतियोगिता के विजेता, उपविजेता



बैडमिंटन प्रतियोगिता के विजेता, उपविजेता



लेखा मनोरंजन क्लब की कैरम प्रतियोगिता के विजेता, उपविजेता एवं क्लब के सदस्य



क्रिकेट मैच से पूर्व खिलाड़ी सदस्य



क्रिकेट प्रतियोगिता के पुरस्कृत खिलाड़ी



श्री राजीव कुमार, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) तथा डॉ0 काव्यदीप जोशी, वरि0 उपमहालेखाकार (प्रशा0) क्रिकेट खिलाड़ियों के साथ

कल्याण अनुभाग की गतिविधियाँ





स्पेन के हुएल्वा में दिनांक 28.11.2021 से 04.12.2021 तक आयोजित BWF वर्ल्ड सीनियर्स चैम्पियनशिप में अभिषेक अग्रवाल, स0ले0अ0 (तदर्थ) तथा श्रीमती शिखा खण्डूरी, सहायक पर्यवेक्षक द्वारा प्रतिभाग



श्री संजीव जखमोला, सहायक पर्यवेक्षक ऑल इंडिया सिविल सर्विसेस टूर्नामेंट में कप्तान के रूप में प्रतिभाग करते हुए



श्री प्रशांत कुमार, स.ले.अ.(तदर्थ) तथा श्री सूरज क्षेत्री, लेखाकार
शतरंज टूर्नामेंट में प्रतिभाग करते हुए



श्री पुष्पेन्द्र कुमार, सहायक पर्यवेक्षक
ट्रॉफी के साथ



श्रीमती शिखा खण्डूरी, सहायक पर्यवेक्षक लगातार 8वीं बार ऑल
इंडिया सिविल सर्विसेस बैडमिन्टन टूर्नामेंट में विजयी पुरस्कार लेते हुए



श्री जे0एस0 सामन्त, पर्यवेक्षक फुटबॉल खिलाड़ियों के साथ

ऑडिट जागरूकता सप्ताह
दिनांक 16.11.2021 से 18.11.2021 तक



प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) ऑडिट जागरूकता सप्ताह का कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए



कार्यालय के कार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) एवं कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) के कर्मचारी लघुनाटिका प्रस्तुत करते हुए



ऑडिट सप्ताह समारोह के सांस्कृतिक कार्यक्रम का आनन्द लेते हुए दर्शक

सेवानिवृत्ति



प्रधान महालेखाकार, श्री संदीप सिंह, श्री प्रताप सिंह खड़ाई वरि0 लेखाधिकारी को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए



वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन) डॉ0 काव्यदीप जोशी, श्री हरपाल सिंह, पर्यवेक्षक को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए



श्री संदीप सिंह, प्रधान महालेखाकार, श्री वी0के0शर्मा, वरि0 लेखाधिकारी को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए



उपमहालेखाकार (निधि) श्री तुषार कैन, श्री राकेश पाण्डेय, वरि0 लेखाकार को पुष्प गुच्छ भेंट करते हुए



प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा) श्री प्रवीन्द्र यादव, श्री यशपाल सिंह, पर्यवेक्षक को स्मृति चिन्ह भेंट करते हंए



श्री राजीव कुमार, महालेखाकार श्री श्याम बिहारी वरि0 लेखाकार को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए



श्री तुषार कैन उपमहालेखाकार (निधि)
श्री राजेन्द्र सिंह नेगी वरि0 लेखाधिकारी को
स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए



श्री राजीव कुमार, महालेखाकार
श्री दिनेश कश्यप, पर्यवेक्षक को
स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए



श्री संदीप सिंह, प्रधान महालेखाकार की सेवानिवृत्ति के अवसर पर
श्री तुषार कैन, उपमहालेखाकार द्वारा अभिनन्दन

श्रद्धांजलि

बीते एक बरस में हमारे बीच के दो साथियों के असमय प्रयाण का अप्रिय समाचार साझा करते हुए अत्यन्त कष्ट हो रहा है। पत्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं की चिरशन्ति की कामना करता है।



स्व0 श्री संदीप सिंह बिष्ट,
खण्डीय लेखाधिकारी ग्रेड–I
जन्म – 24.11.1971
मृत्यु – 11.11.2021



स्व0 श्री चन्द्र बहादुर थापा,
बहुकार्यकर्मी
जन्म – 15.09.1968
मृत्यु – 21.02.2022



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth & Public Interest

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
उत्तराखण्ड, देहरादून